



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 114]

नई दिल्ली, बुधवार, अगस्त 16, 2000/श्रावण 25, 1922

No. 114]

NEW DELHI, WEDNESDAY, AUGUST 16, 2000/SRAVANA 25, 1922

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण, नई दिल्ली

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 अगस्त, 2000

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमा कंपनियों के वित्तीय विवरण और संपरीक्षक की रिपोर्ट तैयार करना) विनियम, 2000

फा. सं. आई आर डी ए/रेग्यू/8/2000.— प्राधिकरण, बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 114क द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बीमा सलाहकार समिति के परामर्श से, निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात्:-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ-(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमा कंपनियों के वित्तीय विवरण और संपरीक्षक की रिपोर्ट तैयार करना) विनियम, 2000 है।

(2) ये राजपत्र में प्राक्षण की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषा-(1) इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) "अधिनियम" से बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) अभिप्रेत है;

(ख) "प्राधिकरण" से बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन स्थापित बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(ग) इस में प्रयुक्त सभी शब्दों और पदों का वही अर्थ है जो उनका क्रमशः बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) या कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) में है।

3. वित्तीय विवरण, प्रबंध रिपोर्ट और संपरीक्षक की रिपोर्ट तैयार करना : (1) जीवन बीमा कारबार करने वाला बीमाकर्ता, इन विनियमों के प्रारंभ के पश्चात्, अनुसूची के की अपेक्षाओं का अनुपालन करेगा।

(2) साधारण बीमा कारबार करने वाला बीमाकर्ता, इन विनियमों के प्रारंभ के पश्चात्, अनुसूची ख की अपेक्षाओं का अनुपालन करेगा :

परन्तु यह उपविनियम, आवश्यक परिवर्तनों सहित, तब तक पुनर्बीमाकर्ताओं को भी लागू होगा, जब तक पृथक् विनियम नहीं बनाए जाते हैं।

(3) प्रत्येक बीमाकर्ता और पुनर्बीमाकर्ता के वित्तीय विवरणों पर संपरीक्षक की रिपोर्ट अनुसूची ग की अपेक्षाओं के अनुरूप होगी या उन परिस्थितियों में उनके यथासाध्य निकटतम होगी।

(4) प्राधिकरण, यथास्थिति, बीमाकर्ता या पुनर्बीमाकर्ता के संपरीक्षकों की नियुक्ति, उनके बने रहने या उन्हें हटाने के विषय में समय-समय पर पृथक्-पृथक् मार्गदर्शक सिद्धान्त जारी कर सकेगा और ऐसे मार्गदर्शक सिद्धान्तों में संपरीक्षकों की अहताओं और अनुभव, उनके चक्रानुक्रम, नियुक्ति की कालावधि आदि के बारे में रीतियां सम्मिलित हो सकेंगी।

अनुसूची क (विनियम 3 देखें)

भाग 1

विसीय विवरण तैयार करने के लिए लेखा सिद्धान्त

1. लेखा मानकों का लागू होना : बीमाकर्ता का प्रत्येक तुलनपत्र, राजस्व लेखा (पालिसीधारकों का लेखा), प्राप्ति और संदाय लेखा (नकदी आदान-प्रदान विवरण) और लाभ-हानि लेखा (शेयरधारकों का लेखा) आई सी ए आई द्वारा जारी किए गए लेखा मानकों (ले. मा.) के अनुरूप होंगे, जहां तक वे जीवन बीमा कारबार करने वाले बीमाकर्ताओं को लागू हों, सिवाय—

(i) लेखा मानक 3 (ले. मा. 3)—नकदी आदान-प्रदान विवरण—नकदी आदान-प्रदान विवरण केवल प्रत्यक्ष पद्धति के अन्तर्गत बनाया जाएगा।

(ii) लेखा मानक 17 (ले. मा. 17)—सेगमेंट रिपोर्टिंग लागू होगी, चाहे बीमाकर्ता की प्रतिभूतियां खुले आम बेची जाती हैं या नहीं।

2. प्रीमियम : प्रीमियम, जब शोध्य हो, आय के रूप में मान्य होगा। सहजद्वंद्व कारबार के लिए संदाय की शोध्य तारीख को, वह तारीख माना जाएगा, जब सहयोगित एक क सूजित किए जाते हैं।

3. प्रीमियम कमी : प्रीमियम कमी मान्य होगी, यदि प्रत्याशित दावा लागत की राशि, संबंधित व्यय और अनुरक्षण आय संबंधित अनुपार्जित प्रीमियमों से अधिक हो जाती है।

4. अर्जन लागत : अर्जन लागतें, यदि कोई हों, उस अवधि में व्यय की जाएंगी, जिसमें वे उपगत हुई हैं।

अर्जन लागतें वे हैं जो नई और नवीकृत बीमा संविदाओं के अर्जन से भिन्न हैं और प्रथमतः उनसे संबंधित हैं। इसकी सब से अत्यावश्यक परख बीमा संविदाओं की लागतों और उनके निष्पादन के बीच आबद्धकर संबंध है (अर्थात् जोखिम का प्रारंभ)।

5. दावों की लागत : दावों की अंतिम लागत में पालिसी फायदा रकम और दावों की निपटारा लागतें, जहां कहीं लागू हों, सम्मिलित होंगी।

6. बीमांकिक मूल्यांकन-प्रवृत्त जीवन पालिसियों के दायित्व : प्रवृत्त जीवन पालिसियों के विरुद्ध दायित्व का अनुमान बीमाकर्ता के नियत बीमांकक द्वारा जीवन बीमा कारबार के अपने वार्षिक अन्वेषण के अनुसार अवधारित किया जाएगा। बीमांकिक उपधारणाएं लेखा के टिप्पणों के रूप में प्रकट की जाएंगी।

दायित्व की इस प्रकार गणना की जाएगी कि भावी प्रीमियम संदायों और विनिधान आय को मिलाकर बीमाकर्ता सभी भावी दावों (जिनके अन्तर्गत पालिसीधारियों को बोनस हकदारियां भी हैं) और व्ययों को पूरा कर सके।

7. विनिधानों का मूल्य अवधारित करने के लिए प्रक्रिया : बीमाकर्ता विनिधानों के मूल्य निम्नलिखित रीति में अवधारित करेगा:-

(क) पूर्ण स्थामिक स्थावर संपदा-विनिधान संपत्ति : विनिधान संपत्ति का मूल्य ऐतिहासिक लागत पर अवधारित किया जाएगा, जो प्रत्येक तीन वर्षों में कम से कम एक बार पुनर्मूल्यांकन के अधीन होगा। विनिहित संपत्ति की अग्रीतीन रकम में परिवर्तन पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती में ले जाया जाएगा।

अग्रनीत रकम में परिवर्तन पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती में ले जाया जाएगा।

बीमाकर्ता प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख पर यह निर्धारित करेगा कि क्या विनिहित संपत्ति में कोई हास हुआ है।

पूर्ण स्वामिक स्थावर संपदा की अग्रनीत रकम में परिवर्तनों के कारण हुए अभिलाभ और हानियों को “पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती” के अधीन साधारण शेयरों में ले जाया जाएगा। यथास्थिति, “विनिधानों के विक्रय पर लाभ” और “विनिधानों के विक्रय पर हानि” किसी विशिष्ट संपत्ति के संबंध में “पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती” शीर्षक के अधीन साधारण शेयरों में पूर्व में मान्यताप्राप्त अग्रनीत रकम में संचित परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाएगा और जो उस संपत्ति के विक्रय पर सुसंगत राजस्व लेखा या लाभ और हानि लेखा में पुनः लाया जा रहा है।

पुनर्मूल्यांकन के लिए आधार, लेखाओं के टिप्पणों में प्रकट किए जाएंगे। प्राधिकरण, पालिसीधारियों को बोनस घोषित करने के लिए पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती से निर्मुक्त रकम को विनिर्दिष्ट करते हुए निदेश जारी कर सकेगा। शंकाओं को दूर करने के लिए यह स्पष्ट किया जाता है कि उस रकम को छोड़कर, जो प्राधिकरण के निदेश के अनुसार पालिसीधारियों के लिए निर्मुक्त की जाती है, कोई अन्य रकम पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती लेखा में से शेयरधारकों को वितरित नहीं की जाएगी।

कोई हास हानि तत्काल राजस्व/लाभ और हानि लेखा में व्यय के रूप में मान्य होगी, जब तक कि आस्ति पुनर्मूल्यांकित रकम में अग्रनीत नहीं की जाती है। किसी पुनर्मूल्यांकित आस्ति की कोई हास हानि उस आस्ति की पुनर्मूल्यांकन कमी के रूप में मानी जाएगी और यदि हास हानि तत्स्थानी पुनर्मूल्यांकन आरक्षिती से अधिक हो जाती है तो ऐसा आधिकरण राजस्व/लाभ और हानि लेखा में व्यय के रूप में मान्य होगा।

(ख) ऋण प्रतिभूतियां : ऋण प्रतिभूतियां, जिनके अन्तर्गत सरकारी प्रतिभूतियां और मोचनीय अधिमानी शेयर भी हैं, “परिपक्वता तक धारित” प्रतिभूतियों के रूप में मानी जाएंगी और क्रमिक अपाकरण के अधीन रहते हुए, ऐतिहासिक लागत पर मापी जाएंगी।

(ग) साधारण शेयर प्रतिभूतियां और व्युत्पन्न लिखतें, जो सक्रिय बाजारों में बेची जाती हैं : सूचीबद्ध साधारण शेयर प्रतिभूतियां और व्युत्पन्न लिखतें, जो सक्रिय बाजारों में बेची जाती हैं, तुलन पत्र की तारीख को उचित मूल्य पर मापी जाएंगी। उचित मूल्य की गणना करने के प्रयोजन के लिए जहां प्रतिभूतियां सूचीबद्ध हैं, शेयर बाजारों में अंतिम कोट की गई बंद कीमत की निम्नतम कीमत ली जाएगी।

बीमाकर्ता प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख को निर्धारित करेगा कि क्या सूचीबद्ध साधारण शेयर प्रतिभूति(यां)/व्युत्पन(ों) लिखतें का कोई हास हुआ है।

किसी सक्रिय बाजार से ऐसा बाजार अभिप्रेत होगा, जहां बेची जाने वाली प्रतिभूतियां एक ही प्रकार हैं, अच्छुक क्रेताओं की और इच्छुक विक्रेताओं की उपलब्धता सामान्य है और कीमतें खुले आम उपलब्ध हैं।

सूचीबद्ध साधारण शेयरों और व्युत्पन्न लिखतों के उचित मूल्य में परिवर्तन के कारण उद्भूत अप्राप्त अभिलाओं/हानियों को “उचित मूल्य परिवर्तन लेखा” शीर्ष के अधीन साधारण शेयर में ले जाया जाएगा। यथास्थिति, “विनिधानों के विक्रय पर लाभ” या “विनिधानों के विक्रय पर हानि” में किसी विशिष्ट प्रतिभूति के संबंध में “उचित मूल्य परिवर्तन लेखा” शीर्षक के अधीन साधारण शेयर में पूर्व में मान्यताप्राप्त उचित मूल्य में संचित परिवर्तन सम्मिलित होंगे और जो उस सूचीबद्ध प्रतिभूति के वास्तविक विक्रय पर सुसंगत राजस्व लेखा या लाभ और हानि लेखा में पुनः लाया जा रहा है।

प्राधिकरण, पालिसीधारियों को बोनस घोषित करने के लिए उचित मूल्य परिवर्तन लेखा से निर्मुक्त की जाने वाली रकम विनिर्दिष्ट करते हुए निदेश जारी कर सकेगा। शंका को दूर करने के लिए यह स्पष्ट किया जाता है कि उस रकम को छोड़कर, जो प्राधिकरण के निदेश के अनुसार पालिसीधारियों के लिए निर्मुक्त की जाती है, कोई अन्य रकम उचित मूल्य परिवर्तन लेखा में से शेयरधारकों को वितरित नहीं की जाएगी।

बीमाकर्ता प्रत्येक तुलन पत्र को तारीख को निर्धारित करेगा कि क्या कोई हास हुआ है। कोई हास हानि, राजस्व/लाभ और हानि लेखा में व्यय के रूप में मान्य किसी पूर्व हास हानि से कम करके प्रतिभूति/विनिधान के मापित उचित मूल्य और उसकी अर्जन लागत के बीच अन्तर के विस्तार तक, राजस्व/लाभ और हानि लेखा में व्यय के रूप में मान्य होगी। राजस्व/लाभ और हानि लेखा में पूर्व में, मान्य हास हानि का कोई उल्टाव राजस्व/लाभ और हानि लेखा में मान्य होगा।

(घ) असूचीबद्ध और सक्रिय रूप से बेची जाने वाली साधारण शेयर प्रतिभूतियां और व्युत्पन्न लिखते : ऐसी असूचीबद्ध साधारण शेयर प्रतिभूतियां और व्युत्पन्न लिखते तथा सूचीबद्ध साधारण शेयर प्रतिभूतियां और व्युत्पन्न लिखते, जो सक्रिय बाजारों में नियमित रूप से बेची नहीं जाती हैं, ऐतिहासिक कीभत पर भाषी जाएंगी। ऐसे विनिधानों के मूल्य में कमी के लिए उपबंध किया जाएगा। इस प्रकार किया गया उपबंध बाद में उलट दिया जाएगा, यदि बाहरी साक्ष्य पर आधारित अनुमान, उसकी अग्रनीत रकम के ऊपर विनिधान के मूल्य में कोई वृद्धि दर्शित होती है। इस उपबंध के उल्टाव के कारण विनिधान की बढ़ी हुई अग्रनीत रकम ऐतिहासिक लागत से अधिक नहीं होगी।

इस विनियम के प्रयोजनों के लिए कोई प्रतिभूति सक्रिय रूप से बेची जाने वाली नहीं भानी जाएगी यदि उसके बेचे जाने की मात्रा, अंतिम बारह मास के दौरान किसी व्यापारिक सत्र में दस हजार इकाईयों से अधिक नहीं है।

8. उधार : उधार, हास के उपबंधों के अधीन रहते हुए, ऐतिहासिक लागत पर मापे जाएंगे।

बीमाकर्ता अपनी उधार आस्तियों की क्वालिटी का निर्धारण करेगा और हास के लिए उपबंध करेगा। हास उपबंध, उन उधारों की सकल रकम से कम नहीं होगा, जो नीचे उल्लिखित प्रकृति के व्यतिक्रमों के अध्यधीन हैं :-

(i) छह मास की अवधि से अधिक के लिए असंदर्भ रहा व्याज; और

(ii) उधार की किस्त (किस्तें) जो शोध्य हैं और पिछले छह मास के दौरान असंदर्भ रही हैं।

9. सहबद्ध कारबार : विनिधानों के मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त लेखा सिद्धांत, ऊपर प्रगणित सिद्धांतों से संगत होंगे। सहबद्ध कारबार की प्रत्येक पृथक् कूत निधि के लिए वित्तीय विवरणों का एक पृथक् सैट उपाबद्ध किया जाएगा।

पृथक् कूत निधियां, ऐसी निधियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो ऐसे पालिसीधारियों के विनिर्दिष्ट विनिधान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लेखाओं में बनाई रखी जाती हैं, जो विनिधान जोखिम उठाते हैं। सामान्यतः विनिधान आय/अभिलाभ और हानियां प्रत्यक्षतः पालिसीधारियों को होती हैं। प्रत्येक लेखा की आस्तियां पृथक् की जाती हैं और उन दावों के अध्यधीन नहीं होतीं, जो बीमाकर्ता के किसी अन्य कारबार से उद्भूत हों।

10. भावी विनियोग के लिए निधियां : भावी विनियोग के लिए निधियां पृथक्: प्रस्तुत की जाएंगी।

भावी विनियोग के लिए निधियां, उन सभी निधियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनका आवंटन, या तो पालिसीधारियों के लिए है या शेयरधारकों के लिए है, वित्तीय वर्ष के अन्त तक अवधारित नहीं किया गया है।

भाग 2

वित्तीय विवरणों के भाग रूप प्रकटन

अ. निम्नलिखित तुलनपत्र के टिप्पणी के रूप में प्रकट किए जाएंगे :

1. समानित दायित्व :

(क) भागत: समादत्त विनिधान

(ख) अकाया हामीदारी अभिबंधन

(ग) ऋणों के रूप में अभिस्वीकृत न किए दावे, पालिसियों के अन्तर्गत आने वाले से भिन्न

(घ) कंपनी द्वारा या उसकी ओर से दी गई प्रत्याभूति

- (ड) विवाद में कानूनी मांग/दायित्व, जिनके लिए उपबंध नहीं हैं
- (च) पुनर्बीमा दायित्व
- (छ) अन्य (जो विनिर्दिष्ट किए जाएंगे)।
2. प्रवृत्त जीवन पालिसियों के लिए सायित्वों के मूल्यांकन के बारे में बीमांकिक उपधारणाएं।
3. भारत में और भारत के बाहर कंपनी की आस्तियों के विल्लंगम।
4. उधारों, विनिधानों और स्थिर आस्तियों के लिए किए गए अभिबंधन और बकाया।
5. ऋण प्रतिभूतियों के अपाकरण का आधार।
6. निपटाए गए और तुलन पंत्र की तारीख को छह मास से अधिक अवधि के लिए बकाया रहे दावे।
7. निम्नलिखित के लिए विनिधानों के संबंध में संविदाओं का मूल्य—
- (क) क्रय, जहां परिदान लंबित है;
- (ख) विक्रय, जहां संदाय लम्बे समय से लम्बित है।
8. बीमा कारबार से संबंधित प्रचालन व्यय : कारबार के विभिन्न खंडों के व्यय के आवंटन का आधार।
9. प्रबंधकीय पारिश्रमिक की गणना।
10. उचित मूल्य के आधार पर मूल्यांकित विनिधानों की ऐतिहासिक लागत।
11. विनिधान संपत्ति के पुनर्मूल्यांकन का आधार।
- आ. निम्नलिखित लेखा नीतियां वित्तीय विवरणों का अभिन्न भाग होंगी :-
1. आई सी ए आई द्वारा जारी किए गए लेखा मानकों के अनुसार सभी महत्वपूर्ण लेखा नीतियां तथा लेखा सिद्धान्तों के भाग 1 में दिए महत्वपूर्ण सिद्धान्त और नीतियां। बीमाकर्ता द्वारा अनुसरित की जाने वाली किन्हीं अन्य लेखा नीतियों का आई सी ए आई द्वारा जारी किए गए लेखा मानक ले. मा. 1 के अधीन अपेक्षित रीति में कथन किया जाएगा।
 2. लेखा नीतियों का कोई विचलन, ऐसे विचलन के कारणों सहित पृथक्: प्रकट किया जाएगा।
- इ. निम्नलिखित जानकारी भी प्रकट की जाएगी :-
1. किसी कानूनी अपेक्षा के अनुसार किए गए विनिधानों को भारत में और भारत के बाहर उनकी रकम, प्रकृति, प्रतिभूति और किन्हीं विशेष अधिकारों सहित पृथक्: प्रकट किया जाना चाहिए।
 2. प्राधिकरण द्वारा जारी किए गए निदेशों, यदि कोई हो, के अनुसार आय की मान्यता के प्रयोजन के लिए उपयोजित/अनुपयोजित विनिधानों में पृथक्: करण।
 3. आस्तियां, जिस विस्तार तक स्थानीय विधियों के अधीन निक्षिप्त की जानी या अन्यथा भारत में या भारत के बाहर विल्लंगमित की जानी अपेक्षित हैं।
 4. सेक्टर-बार कारबार की प्रतिशतता।
 5. प्राधिकरण द्वारा विहित रीति में अंतिम पांच वर्षों के वित्तीय विवरणों का संक्षेप।
 6. पालिसीधारियों और शेयरधारकों के बीच विनिधानों और उन पर आय के आवंटन के आधार।
 7. प्राधिकरण द्वारा विहित किया जाने वाला लेखा अनुपात।

भाग 3

वित्तीय विवरणों के तैयार करने के लिए साधारण अनुदेश

1. तुलन पत्र, राजस्व लेखा, लाभ और हानि लेखा तथा प्राप्ति और संदाय लेखा में दर्शित सभी मदों के लिए ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष के लिए तत्स्थानी रकमें दी जाएंगी।

2. वित्तीय विवरणों में अंकों को निकटतम हजारों तक पूर्णांकित किया जा सकेगा।

3. किसी विनिधान के संबंध में प्राप्ति-योग्य ब्याज, लाभांश और किराए को सकल रकम के रूप में कथित किया जाना चाहिए, स्रोत पर काटे गए आय-कर की रकम को “अग्रिम कर संदर्त” और स्रोत पर काटे गए करों के अधीन सम्मिलित किया जाना चाहिए।

4. (I) वित्तीय विवरणों के प्रयोजन के लिए, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,-

(क) “उपबंध” पद का निम्न (I) के अध्यधीन अर्थ होगा कि अपलिखित या अवक्षयण नवीकरण या आस्तियों के मूल्य में कमी के लिए उपबंध करने के रूप में प्रतिधारित या ऐसे किसी ज्ञात दायित्व या हानि के लिए जिसकी रकम की शुद्धता पर्याप्तता के साथ अवधारित नहीं की जा सकती है, उपबंध करने के रूप में प्रतिधारित, कोई रकम;

(ख) “आरक्षित” पद में यथापूर्वाक्त के अध्यधीन अपलिखित या अवक्षयण, नवीकरण का आस्तियों के मूल्य में कमी करने के लिए उपबंध करने के रूप में प्रतिधारित या किसी ज्ञात दायित्व या हानि के लिए उपबंध करने के रूप में प्रतिधारित कोई रकम सम्मिलित नहीं होगी;

(ग) “पूँजी आरक्षित” पद में लाभ और हानि लेखा के माध्यम से वितरण के लिए मुक्त मानी जाने वाली कोई रकम सम्मिलित नहीं है ; और “राजस्व आरक्षित” पद से किसी “पूँजी आरक्षित” से भिन्न कोई आरक्षित अभिप्रेत होगी;

(घ) “दायित्व” पद में संविदाज्ञात व्यय के संबंध में सभी दायित्व और सभी विवादाग्रस्त या समाश्रित दायित्व सम्मिलित होंगे।

(II) जहां :-

(क) अपलिखित या अवक्षयण, नवीकरण या आस्तियों के मूल्य में कमी के लिए उपबंध करने के रूप में प्रतिधारित कोई रकम, या

(ख) किसी ज्ञात दायित्व या हानि के लिए उपबंध करने के रूप में प्रतिधारित कोई ऐसी रकम, जो निदेशकों की राय में उस प्रयोजन के लिए समुचित आवश्यक रकम से अधिक है, तो आधिक्य को आरक्षित के रूप में माना जाएगा न कि उपबंध के रूप में।

5. कंपनी उन वादों के अधीन नुकसानी के लिए उपबंध करेगी, जहां प्रबंध की राय है कि पंचाट बीमाकर्ता के विरुद्ध हो सकता है।

6. कानूनी उपबंधों, यदि कोई हो, के आधिक्य में कल्पित जोखिमों को अंतर्वलित प्रीमियमों की रकम और जोखिम के अन्तर्गत आने वाली रकम को दर्शित करते हुए, पृथक्तः प्रकट करना होगा।

7. लाभ और हानि-लेखा का नामे पक्ष का कोई अतिशेष गैर अभिबंधित आरक्षितियों से कटौती के रूप में दर्शित किया जाएगा और अतिशेष यदि कोई हो, पृथक्तः दर्शित किया जाएगा।

भाग 4

प्रबंध-तंत्र की रिपोर्ट की विषय-वस्तु

वित्तीय विवरणों के साथ एक प्रबंध-तंत्र की रिपोर्ट संलग्न होगी जिस में अन्य बातों के साथ प्रबंध-तंत्र द्वारा सम्प्रकृतः अधिप्रमाणित निम्नलिखित होंगे :-

1. प्राधिकरण द्वारा अनुदत्त रजिस्ट्रीकरण की वैधता जारी रहने के बारे में पुष्टिकरण;

2. यह प्रमाणन कि कानूनी प्राधिकारियों को संदेय सभी शोध्य सम्प्रकृतः संदत्त कर दिए हैं;

3. इस प्रभाव का पुष्टिकरण कि शेयरधारण पैटर्न और वर्ष के दौरान शेयरों का कोई अन्तरण कानूनी या विनियामक अपेक्षाओं के अनुसार है;

4. यह घोषण कि प्रबंध-तंत्र ने भारत में जारी की गई पालिसियों के धारकों की निधियों का प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः भारत के बाहर विनिधान नहीं किया है;

5. यह पुष्टिकरण कि अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिकों को बनाए रखा है;

6. इस आशय का प्रमाणपत्र कि सभी आस्तियों के मूल्य तुलन पत्र की तारीख को पुनर्विलोकित किए गए हैं और उसका (बीमाकर्ता) विश्वास है कि तुलन पत्रों में वर्णित आस्तियां अनेक शीर्षकों—“उधारों”, “विनिधानों”, “अभिकर्ताओं के अतिशेष”, “बकाया प्रीमियमों”, “बकाया व्याज, लाभांशों और किराया”, “व्याज, लाभांश और किराए जो उद्भूत हैं किन्तु शोध्य नहीं हैं”, “बीमा कारबार चलाने वाले अन्य व्यक्तियों या निकायों से शोध्य रकमें”, “अन्यान्य ऋणी”, “प्राप्य बिल”, “नकदी” और “अन्य लेखाओं के अधीन विनिर्दिष्ट अनेक भद्रे—के अधीन उनके वसूली योग्य या बाजार मूल्य से अनधिक रकम पर सकल में दर्शित हैं;

7. इस आशय का प्रमाणपत्र कि जीवन बीमा निधि का कोई भी भाग, जीवन बीमा निधियों का उपयोजन और विनिधान से संबंधित बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) के उपबंधों के उल्लंघन में प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः उपयोजित नहीं किया गया है;

8. सम्पूर्ण जोखिम अभिदर्शन के बारे में प्रकटन और उसे कम करने के लिए अपनाई गई रणनीति;

9. अन्य देशों में प्रचालन, यदि कोई हो, एक पृथक विवरण के साथ, जिसमें देश के जोखिम और अभिदर्शन जोखिम के बारे में प्रबंध-तंत्र का अनुमान हो और उसकी रोकथाम के लिए अपनाई गई रणनीति;

10. दावों की समयावधि, जिसमें पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान, औसतन दावा निपटारा समय प्रवृत्ति उपदर्शित करें;

11. इस आशय का प्रमाणपत्र कि किस प्रकार विनिधानों तथा स्यक और शेयरों की कीमतें, जैसी कि तुलन पत्र में दर्शित हैं, निकाली गई हैं और कैसे उनका बाजार मूल्य, इस प्रकार दर्शित मूल्यों के साथ, तुलना के प्रयोजन के लिए अभिनिश्चित किया गया है;

12. पोर्टफोलियो के अनुसार आस्ति की क्वालिटी और विनिधान के उपयोग का पुनर्विलोकन और पूर्ण स्वामिक स्थावर संपदा, ऋणों, विनिधानों, आदि के रूप में पृथक्तः पुनर्विलोकन;

13. एक उत्तरदायित्व विवरण, जिसमें निम्नलिखित उपदर्शित करें :-

(क) वित्तीय विवरण तैयार करने में लागू लेखा मानकों, सिद्धान्तों और नीतियों का, तात्काल विचलनों, यदि कोई हो, से संबंधित उचित स्पष्टीकरणों के साथ, अनुसरण किया गया है;

(ख) प्रबंध-तंत्र ने लेखा नीतियों को अपनाया है और उन्हें दृढ़ता से लागू किया है और ऐसे निर्णय किए तथा अनुमान लगाए जो उचित और प्रजावान हों, जिससे कि वित्तीय वर्ष के अन्त में कंपनी के कार्यकलाप की स्थिति का सही और ऋण चित्र और प्रचालन लाभ या हानि का और वर्ष के लिए कंपनी के लाभ या हानि का सही-सही चित्र प्रस्तुत हो सके;

(ग) प्रबंध-तंत्र ने कंपनी की आस्तियों के रक्षोपाय के लिए और धोखा तथा अन्य अनियमितताओं की रोकथाम के लिए बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4)/कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के लागू उपबंधों के अनुसार पर्याप्त लेखा अभिलेखों को बनाए रखने के लिए उचित और पर्याप्त सावधानी बरती हैं;

(घ) प्रबंध-तंत्र ने एक चालू समुद्धान के आधार पर वित्तीय विवरण तैयार किए हैं;

(ङ) प्रबंध-तंत्र ने यह सुनिश्चित किया है कि आंतरिक संपरीक्षा पद्धति विद्यमान कारबार के आकार और प्रकृति के अनुरूप हों और वह प्रभाषी रूप से कार्य कर रही है।

भाग 5

वित्तीय विवरणों की तैयारी

1. बीमाकर्ता राजस्व लेखा (पालिसीधारियों का लेखा), लाभ और हानि लेखा (शेयरधारकों का लेखा) और तुलन पत्र प्ररूप क-रा ले, प्ररूप क-ला हा और प्ररूप क-तु प में, जैसा इस भाग में विहित है या उसके यथासंभव निकट, जितनी परिस्थितयां अनुज्ञात करें, तैयार करेगा :

परन्तु बीमाकर्ता नीचे उल्लिखित कारबार के लिए राजस्व लेखा पृथक्तः तैयार करेगा और उस विस्तार तक ले वि 17 का लागू होना उपांतरित होगा :-

(क) भाग लेने वाली पालिसियां और भाग न लेने वाली पालिसियां;

(ख) सहबद्ध, असहबद्ध और स्वास्थ्य बीमा;

(ग) भारत के भीतर कारबार और भारत के बाहर कारबार।

(2) बीमाकर्ता आई सी ए आई द्वारा जारी किए गए ले वि 3—"नकदी आदान-प्रदान विवरण" में विहित प्रत्यक्ष पद्धति के अनुसार पृथक् प्राप्ति और संदाय लेखा तैयार करेगा।

प्ररूप क-रा से

बीमाकर्ता का नाम :

बी. वि. वि. प्रा. के पास रजिस्ट्रेशन सं. और रजिस्ट्रीकरण की तारीख

31 मार्च, 20..... को समाप्त हुए वर्ष के लिए राजस्व लेखा

पालिसीधारियों का लेखा (तकनीकी लेखा)

विशिष्टियाँ	अनुसूची	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
अर्जित प्रीमियम-शुद्ध			
(क) प्रीमियम	1		
(ख) अध्यर्पित पुनर्बीमा			
(ग) स्वीकृत पुनर्बीमा			
विनिधानों से आय			
(क) व्याज, लाभांश और किराया-सकल			
(ख) विनिधानों के विक्रय/मोचन पर लाभ			
(ग) (विनिधानों के विक्रय/मोचन पर हानि)			
(घ) अन्तरण/पुनर्मूल्यांकन पर अभिलाभ/उचित मूल्य में परिवर्तन*			
अन्य आय (विनिर्दिष्ट की जाए)			
योग (क)			
कमीशन	2		
बीमा कारबार से संबंधित प्रचालन व्यय	3		
अन्य व्यय (विनिर्दिष्ट किए जाएं)			
उपबंध (कराधान से भिन्न)			
(क) विनिधानों के मूल्य में कमी के लिए (शुद्ध)			
(ख) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)			
योग (ख)			
संदर्भ फायदे (शुद्ध)	4		
अन्तरिम बोनस संदर्भ			
प्रथम जीवन पालिसीयों के विरुद्ध दायित्व के मूल्यांकन में परिवर्तन			
(क) सकल**			
(ख) (पुनर्बीमा में अध्यर्पित रकम)			
(ग) पुनर्बीमा में स्वीकृत रकम			
योग (ग)			

विधिविद्यां	अनुसूची	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
	'000 रु.	'000 रु.	
अधिशेष/(घाट) (ख) - (क) - (ख) - (ग)			
विनियोग			
शेयरधारकों के लेखा में अन्तरण			
अन्य आरक्षितियों में अन्तरण (विनिर्दिष्ट किया जाए)			
भावी विनियोगों की निधियों में अन्तरण			
योग (घ)			

टिप्पण :

- * प्राधिकरण द्वारा विनिर्दिष्ट मानकों के अनुसार प्राप्त समझे गए अभिलाभ के रूप में है।
- ** बोनस के आबंटन के पश्चात् गणितीय आरक्षिति के रूप में है।

कुल अधिशेष निम्नलिखित घौरे के साथ पृथक्तः प्रकट किया जाएगा:-

- (क) संदर्भ अंतरिम ओनस :
- (ख) पालिसीधारियों को बोनस का आबंटन :
- (ग) राजस्व लेखा में दर्शित अधिशेष :
- (घ) कुल अधिशेष : (क) + (ख) + (ग) :

प्रस्तुति के लिए

बीमाकर्ता का नाम :

श्री. वि. वि. प्रा. के पास रजिस्ट्रीकरण सं. और रजिस्ट्रीकरण की तारीख

31 मार्च, 20..... को समाप्त हुए वर्ष के लिए लाभ और हानि लेखा

शेयरधारकों का लेखा (गैर तकनीकी लेखा)

विशिष्टियां	अनुसूची	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
पालिसीधारियों के लेखा (तकनीकी लेखा) से/उससे अन्तरित अग्रनीत अंतिशेष			
विनिधान से आय			
(क) ब्याज, लाभांश और किराया-सकल			
(ख) विनिधानों के विक्रय/मोचन पर लाभ			
(ग) (विनिधानों के विक्रय/मोचन पर हानि)			
अन्य आय (विनिर्दिष्ट की जाए)			
योग (क)			
बीमा कारबार से प्रत्यक्षतः संबंधित से भिन्न व्यय			
उपबंध (कराधान से भिन्न)			
(क) विनिधानों के मूल्य में कमी के लिए (शुद्ध)			
(ख) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)			
योग (ख)			
कर के पूर्व-लाभ/(हानि)			
कराधान के लिए उपबंध			
कर के पश्चात् लाभ/(हानि)			
विनियोग			
(क) तुलन पत्र से अग्रनीत आरक्षित/अधिशेष			
(ख) वर्ष के दौरान संदर्भ अंतरिम लाभांश			
(ग) प्रस्तावित अंतिम लाभांश			
(घ) कर पर लाभांश वितरण			
(ड) आरक्षितियों/अन्य लेखाओं को अन्तरण (विनिर्दिष्ट किए जाएं)			
तुलन पत्र को अग्रनीत लाभ			

टिप्पणी :

- (क) प्रीमियमों की दशा में, कुल अर्जित प्रीमियम के बीमा कारबार के किसी भाग के बारे में पुनर्बीमा को घटाइए, उसे पृथक्तः प्रकट किया जाएगा।
- (ख) भारत में और भारत के बाहर समाप्त कारबार से प्राप्त प्रीमियम आय।
- (ग) पुनर्बीमा प्रीमियम, थाहे अर्थार्पित या स्वीकृत कारबार पर हों, पुनर्बीमा प्रीमियमों के शीर्ष के अधीन सकल का (अर्थात् कमिशनों की कटौती के पूर्व) लेखा में दिया जाएगा।
- (घ) उपगत दावों में संदर्भ दावे, निपटारा लागतें, जहां कहीं लागू हो, और वर्ष के अन्त में दावों के लिए बकाया उपबंध में परिवर्तन सम्भिलित हैं।
- (ड) व्यय की मर्दों और कुल प्रीमियम के (पुनर्बीमा घटाइए) एक प्रतिशत के अधिक्य में आय या 5,00,000 रु., इन में जो भी उच्चतर हो, को पृथक् लाइन मद के रूप में दर्शाति किया जाएगा।
- (च) दावों से संबंधित फीस और व्यय, दावों में सम्भिलित होंगे।
- (छ) "अन्य" उपशीर्ष के अंतर्गत मर्दें, जैसे कि विदेशी मुद्रा अभिलाभ या हानि और अन्य मर्दें, सम्भिलित होंगी।
- (ज) किसी विनिधान के संबंध में प्राप्ति योग्य ब्याज, लाभांश और किराए, सकल रकम के रूप में कथित किए जाने चाहिए, स्रोत पर काढ़ी गई आय कर की रकम "अग्रिम संदर्भ कर और स्रोत पर काटे गए कर" के अधीन सम्भिलित किए जा रहे हैं।
- (झ) किराए से आय में, केवल प्राप्त किराया सम्भिलित होगा। इसमें कोई काल्पनिक किराया सम्भिलित नहीं होगा।

प्रख्यात क्र-तु प

बीमाकर्ता का नाम :

बी. वि. वि. प्रा. के पास रजिस्ट्रेशन सं. और रजिस्ट्रीकरण की तारीख

31 मार्च, 20..... को तुलन पत्र

विशिष्टियां	अनुसूची	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
निधियों का स्रोत			
शेयरधारकों की निधियाँ			
शेयर पूँजी	5		
आरक्षितियाँ और अधिशेष	6		
जमा/लेखा (विकलन) उचित भूल्य परिवर्तन			
उप-योग			
उधार	7		
पालिसीधारियों की निधियाँ			
जमा/(विकलन) उचित भूल्य परिवर्तन लेखा			
पालिसी दायित्व			
बीमा आरक्षियाँ			
सहबद्ध दायित्वों के लिए उपबंध			
उप-योग			
भावी विनियोगों के लिए निधियाँ			
योग			
निधियों का उपयोजन			
विनिधान			
शेयरधारकों के	8		
पालिसीधारियों के	8क		
सहबद्ध दायित्वों को कवर करने के लिए धारित आस्तियाँ			
उधार	9		
स्थिर आस्तियाँ	10		
चालू आस्तियाँ			
नकदी और बैंक आतिशेष	11		
अंग्रिम और अन्य आस्तियाँ	12		
उप-योग (क)			
चालू दायित्व	13		
उपबंध	14		
उप-योग (ख)			
शुद्ध चालू आस्तियाँ (ग) - (क) - (ख)			
प्रकोण व्यय (अपलिखित या समायोजित न किए गए विस्तार तक)	15		
लाभ और हानि लेखा में विकलन अतिशेष (शेयरधारकों का लेखा)			
योग			

समाप्ति दायित्व

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	भागतः समादत्त विनिधान		
2.	दावे पालिसीयों के विरुद्ध से भिन्न, जो कंपनी द्वारा त्रिलोगों के रूप अभिस्थीकृत नहीं किए गए		
3.	बकाया हामीदारी अभिबंधन		
4.	कंपनी द्वारा या उसकी ओर से दी गई प्रत्याभूतियां		
5.	विवाद में कानूनी मांग/दायित्व, जिनके लिए उपबंध नहीं हैं		
6.	पुनर्बीमा दायित्व		
7.	अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	योग		

विस्तीय विवरणों का भाग रूप होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची-1
प्रीमियम

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	प्रथम वर्ष प्रीमियम		
2.	नवीकृत प्रीमियम		
3.	एकल प्रीमियम		
	कुल प्रीमियम		

	लिखित कारबार से प्रीमियम आय :		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	कुल प्रीमियम (शुद्ध)		

टिप्पणी :

पुनर्बीमा प्रीमियम, चाहे अधिकृत या स्वीकृत कारबार पर हों, पुनर्बीमा प्रीमियम के शीर्ष के अधीन कमीशन काटने के पूर्व लेखा में लिए जाएंगे।

अनुसूची-2

कमीशन व्यय

विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
	'000 रु.	'000 रु.
संदत कमीशन		
प्रत्यक्ष - प्रथम वर्ष प्रीमियम - नवीकृत प्रीमियम - एकल प्रीमियम		
जोड़िए : पुनर्बीमा स्वीकृत किए गए पर कमीशन		
घटाइए : पुनर्बीमा अभ्यर्पित किए गए पर कमीशन		
शुद्ध कमीशन		

टिप्पण :

लाभ/कमीशन को, यदि कोई हो, पुनर्बीमा स्वीकृत या पुनर्बीमा अभ्यर्पित के अंकों के साथ सम्मिलित किया जाएगा।

अनुसूची-3

बीमा कारबार से संबंधित प्रचालन व्यय

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	कर्मचारियों का पारिश्रमिक और कल्याण प्रसुविधाएं		
2.	यात्रा, बाहन और यान परिचालन व्यय		
3.	किराया, रेट और कर		
4.	मरम्मत		
5.	मुद्रण और लेखन सामग्री		
6.	संचार व्यय		
7.	विधिक और व्यावसायिक प्रभार		
8.	चिकित्सा फीस		
9.	लेखापरीक्षकों की फीस, व्यय, आदि (क) लेखा परीक्षक के रूप में (ख) निम्नलिखित के बारे में सलाहकार या किसी अन्य रूप में - (i) कराधान मामले (ii) बीमा मामले (iii) प्रबंध सेवाएं; और (ग) किसी अन्य हैसियत में		
10.	विज्ञापन और प्रचार		
11.	ब्याज और बैंक प्रभार		
12.	अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
13.	अवक्षपण		
	योग		

टिप्पण :

(क) व्यय की मद्दें, जो शुद्ध प्रीमियम के एक प्रतिशत के आधिक्य में या 5,00,000 रु., इनमें से जो भी अधिक हो, पृथक् लाइन मद्द के रूप में दर्शित की जाएंगी।

(ख) "अन्य उपशीर्ष के अधीन प्रचालन व्यय (बीमा कारबार)" में विदेशी मुद्रा अभिलक्ष्य या हानि और अन्य मद्दें जैसी मद्दें सम्मिलित होंगी।

अनुसूची-4

संदत फायदे (शुद्ध)

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	ब्रीमा दावे :		
	(क) मृत्यु द्वारा दावे		
	(ख) परिपक्वता द्वारा दावे		
	(ग) वार्षिकी/पेन्शन संदाय में		
	(घ) अन्य फायदे, विनिर्दिष्ट करें		
2.	(पुनर्बीमा में अध्यर्थित रकम) :		
	(क) मृत्यु द्वारा दावे		
	(ख) परिपक्वता द्वारा दावे		
	(ग) वार्षिकी/पेन्शन संदाय में		
	(घ) अन्य फायदे, विनिर्दिष्ट करें		
3.	पुनर्बीमा में स्वीकृत रकम :		
	(क) मृत्यु द्वारा दावे		
	(ख) परिपक्वता द्वारा दावे		
	(ग) वार्षिकी/पेन्शन संदाय में		
	(घ) अन्य फायदे, विनिर्दिष्ट करें		
	योग		

	दावेदारों को संदत फायदे :		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	कुल संदत फायदे (शुद्ध)		

टिप्पण :

- (क) दावों में दावा निपटारा लगत, जहां लगू हो, सम्मिलित है।
 (ख) विधिक तथा अन्य फीस और छ्यय भी दावों की लगत का, जहां लगू हो, भाग होंगे।

अनुसूची-५

शेयर पूँजी

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	प्राधिकृत पूँजी साधारण शेयर,रु. का प्रत्येक		
2.	निर्गमित पूँजी साधारण शेयर,रु. का प्रत्येक		
3.	प्रतिश्रुत पूँजी साधारण शेयर,रु. का प्रत्येक		
4.	आहूत पूँजी साधारण शेयर,रु. का प्रत्येक		
5.	घटाइए : असंदर्भ आहूत जोड़िए : समपक्ष शेयर (मूल्य: समादर रकम) घटाइए : क्रय द्वारा वापस साधारण शेयरों का सम-मूल्य घटाइए : प्रारंभिक व्यय : व्यय, जिनके अन्तर्गत शेयरों की हासीदारी या प्रतिश्रुति पर कमिशन या दलाली		
	योग		

टिप्पण :

- (क) पूँजी के भिन्न-भिन्न बगाँ की विशिष्टियों पृथक्तः कथित की जानी चाहिए।
 (ख) बोनस शेयरों के निर्गम के कारण पूँजीकृत रकम प्रकट की जानी चाहिए।
 (ग) यदि पूँजी का कोई भाग नियंत्री कंपनी द्वारा धारित है तो वह भी पृथक्तः प्रकट किया जाना चाहिए।

अनुसूची-५क

धारणा का पैटर्न

(प्रबंध-तंत्र द्वारा यथा प्रमाणित)

शेयरधारक	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष		
	शेयरों की सं.	धृति की %	शेयरों की सं.	धृति की %
संप्रबंधीक				
- भारतीय				
- विदेशी				
अन्य				
योग				

अनुसूची-6
आरक्षिती और अधिशेष

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	पूंजी आरक्षिति		
2.	पूंजी मोचन आरक्षिति		
3.	शेयर प्रीमियम		
4.	पुनर्मूल्यांकन आरक्षिति		
5.	साधारण आरक्षिति घटाइए : लाभ और हानि लेखा, यदि कोई हो, में विकलन अतिशेष घटाइए : क्रय द्वारा वापसी के लिए उपयोग की गई रकम		
6.	आकस्मात् विपत्ति आरक्षिति		
7.	अन्य आरक्षितियां (विनिर्दिष्ट की जाएं)		
8.	लाभ और हानि लेखा में लाभ का अतिशेष		
	योग		

टिप्पण :

आरक्षितियों में परिवर्धन और उनसे कटौतियां विनिर्दिष्ट शीर्षों में से प्रत्येक के अधीन प्रकट की जानी चाहिए।

अनुसूची-7

उधार

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	डिबेन्चरबंध पत्र		
2.	सावधि निक्षेप		
3.	बैंक		
4.	वित्तीय संस्थाएं		
5.	बीमे का कारबार करने वाले अन्य संस्थान		
6.	अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	योग		

टिप्पण :

(क) जहां तक उधार प्रतिभूत हैं उस सीमा तक, प्रत्येक उपशीर्ष के अधीन प्रतिभूति की प्रकृति कथित करते हुए प्रकट किया जाएगा।

(ख) तुलनपत्र के 12 मास के भीतर देय रकमों को पृथक् रूप से दिखाया जाना चाहिए।

अनुसूची-8

विनिधान-शेयरधारक

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
	दीर्घ कालिक विनिधान		
1.	सरकारी प्रतिभूतियां और सरकार द्वारा प्रत्याभूत बंधपत्र जिनमें खजाना हुंडियां भी शामिल हैं		
2.	अन्य अनुमोदित प्रत्यभूतियां		
3.	अन्य विनिधान		
	(क) शेयर (क क) साधारण (ख ख) अधिमानी (ख) पारस्परिक निधियां (ग) व्युत्पन्न लिखते (घ) डिबेन्चर/बंधपत्र (ड) अन्य प्रतिभूतियां (विनिर्दिष्ट की जाएं) (च) सहायिकियां (छ) विनिधान संपत्तियां-रियल एस्टेट		

	लघु अवधि विनिधान		
1.	सरकारी प्रतिभूतियां और सरकार द्वारा प्रत्याभूत बंधपत्र जिसमें खजाना हुंडियां भी शामिल हैं		
2.	अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां		
3.	अन्य विनिधान		
	(क) शेयर (क क) साधारण (ख ख) अधिमानी (ख) पारस्परिक निधियां (ग) व्युत्पन्न लिखते (घ) डिबेन्चर/बंधपत्र (ड) अन्य प्रतिभूतियां (विनिर्दिष्ट की जाएं) (च) सहायिकियां (छ) विनिधान संपत्तियां-रियल एस्टेट		
	योग		
	विनिधान		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	योग		

टिप्पण : अनुसूची 8क के अधीन टिप्पण देखें।

अनुसूची-8क

विनिधान-पालिसीधारक

	विशिष्टियां	चालू वर्ष '000 रु.	पूर्व वर्ष '000 रु.
	दीर्घ अवधि विनिधान		
1.	सरकारी प्रतिभूतियां और सरकार द्वारा प्रत्याभूत बंधपत्र जिसमें खजाना हुंडियां भी शामिल हैं		
2.	अन्य अनुमोदित प्रत्यभूतियां		
3.	(क) शेरर (क क) साधारण (ख ख) अधिमानी (ख) पारस्परिक निधियां (ग) व्युत्पन्न लिखते (घ) डिबेन्चर/बंधपत्र (ङ) अन्य प्रतिभूतियां (विनिर्दिष्ट की जाएं) (च) सहायिकियां (छ) विनिधान संपत्तियां-रियल एस्टेट		
4.	अवसंरचना और सामाजिक सेक्टर में विनिधान		
5.	अनुमोदित विनिधान से भिन्न लघु अवधि विनिधान		
1.	सरकारी प्रतिभूतियां और सरकार द्वारा प्रत्याभूत बंधपत्र जिसमें खजाना हुंडियां भी शामिल हैं		
2.	अन्य अनुमोदित प्रत्यभूतियां		
3.	(क) शेरर (क क) साधारण (ख ख) अधिमानी (ख) पारस्परिक निधियां (ग) व्युत्पन्न लिखते (घ) डिबेन्चर/बंधपत्र (ङ) अन्य प्रतिभूतियां (विनिर्दिष्ट की जाएं) (च) सहायिकियां (छ) विनिधान संपत्तियां-रियल एस्टेट		
4.	अवसंरचना और सामाजिक सेक्टर में विनिधान		
5.	अनुमोदित विनिधान से भिन्न योग		
	विनिधान		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	योग		

टिप्पण : (अनुसूची 8 और 8क को लागू) :

- (क) अनुषंगी/नियंत्री कंपनियों, संयुक्त उद्यमों और सहयोजितों में विनिधान को लागत पर पृथकतः उपदर्शित किया जाएगा।
- नियंत्री कंपनी और अनुषंगी कंपनी का वही अर्थ होगा जो कंपनी अधिनियम, 1956 में दिया गया है।
 - संयुक्त उद्यम एक संविदात्मक प्रबन्ध है, जिसमें दो या दो से अधिक पक्ष, संयुक्त नियंत्रण की शर्त के अधीन, आर्थिक क्रिया-कलाप अपने हाथ में लेते हैं।
 - संयुक्त नियंत्रण-स्थाभ अभिप्राप्त करने के लिए, आर्थिक क्रिया-कलापों की वित्तीय और प्रचालन नीतियों को नियंत्रित करने के लिए शक्ति को बांटने के लिए संविदात्मक करार।
 - संयुक्त-एक ऐसा उपक्रम है जिस पर कंपनी का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है परन्तु न तो वह कंपनी का अनुषंगी होता है और न ही संयुक्त उद्यम कंपनी।
 - महत्वपूर्ण प्रभाव (इस अनुसूची के प्रयोजन के लिए) से अभिप्रेत है कंपनी की वित्तीय और प्रचालन नीतियों में सहभागिता परन्तु इसका अर्थ इनका नियंत्रण नहीं है। महत्वपूर्ण प्रभाव का कई तरीकों से इस्तेमाल किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, निदेशक मंडल में प्रतिनिधि अवधारणा, नीति तैयार करने की प्रक्रिया में भाग लेकर, अन्तर कंपनी तात्त्विक संब्यवहार, प्रबंधकीय व्यक्तियों का आपस में परिवर्तन या तकनीकी सूचना पर निर्भरता। शेयरों के स्वामित्व, कानून या करार द्वारा भी महत्वपूर्ण प्रभाव अभिप्राप्त किया जा सकता है, जहां तक शेयरों के स्वामित्व की बात है, यदि कोई विनिधानकर्ता प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः अनुषंगी के माध्यम से जिसमें विनिधान किया गया है, की मतदान शक्ति का 20 प्रतिशत से कम धारण करता है तो यह मान लिया जाएगा कि उसका महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है। जब तक कि स्पष्ट रूप से अन्यथा यह नहीं दर्शा दिया जाए कि यह मामला अलग है, परिवर्तित रूप से विनिधानकर्ता यदि प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः अनुषंगियों के माध्यम से जिसमें विनिधान किया गया है की मतदान शक्ति का 20 प्रतिशत से अधिक धारण करता है तो यह मान लिया जाएगा कि विनिधानकर्ता का महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है जब तक कि ऐसे प्रभाव को स्पष्ट रूप से उपदर्शित न कर दिया जाए। किसी अन्य विनिधानकर्ता के व्यापक या अहुमत स्वामित्व का यह अर्थ नहीं है कि किसी अन्य विनिधानकर्ता का महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

(ख) कंपनी की सूधीबद्ध साधारण प्रतिभूतियों और व्युत्पन्न लिखतों तथा उनके बाजार मूल्य से भिन्न अन्य निवेशों की कुल राशि को दर्शाया जाएगा।

(ग) प्राकृतिक आपदा आरक्षित से किए गए विनिधान को पृथक् रूप से दर्शाया जाना चाहिए।

(घ) उधार प्रतिभूतियों के “परिपक्वता तक धारित प्रतिभूतियां माना जाएगा और क्रमिक अपाकरण के अधीन रहते हुए ऐतिहासिक लागत पर आकस्मित की जाएंगी।

(ङ) विनिधान संपत्ति से ऐसी संपत्ति (भूमि या भवन या भवन का भाग या दोनों) अभिप्रेत हैं जो किराए से आय या पूँजी मूल्यांकन या दोनों के लिए धारित हो न कि सेवा या प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए।

अनुसूची-9

उधार

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	प्रतिभूतिवार वर्गीकरण		
	प्रतिभूत		
	(क) संपत्ति को बंधक बनाने पर		
	(क क) भारत में		
	(ख ख) भारत के बाहर		
	(ख) शेरों, बंधपत्रों, सरकारी प्रतिभूतियों आदि पर		
	(ग) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	अप्रतिभूत		
	(क) पालिसियों पर उधार		
	(ख) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	योग		
2.	उधार लेने वालों के अनुसार वर्गीकरण		
	(क) केन्द्रीय और राज्य सरकारें		
	(ख) बैंक और वित्तीय संस्थाएं		
	(ग) अनुषंगी		
	(घ) कंपनियां		
	(ड) पालिसियों पर ऋण		
	(च) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	योग		
3.	कार्यनिष्पादन-वार वर्गीकरण		
	(क) मानक के रूप में वर्गीकृत ऋण		
	(क क) भारत में		
	(ख ख) भारत के बाहर		
	(ख) गैर मानक ऋण घटा उपबंध		
	(क क) भारत में		
	(ख ख) भारत के बाहर		
	योग		
4.	परिपक्वता-वार वर्गीकरण		
	(क) लघु अवधि		
	(ख) दीर्घ अवधि		
	योग		

टिप्पणियां :

- (क) लघु अवधि ऋणों में ऐसे ऋण सम्मिलित हैं जिनकी तुलनपत्र से 12 मास के भीतर पुनःअदायगी की जानी है।
- (ख) गैर कार्यनिष्पादन ऋणों के लिए उपबंधों को पृथक्तः दर्शित किया जाएगा।
- (ग) सभी दीर्घ अवधि ऋणों की दशा में प्रतिभूति की प्रकृति को विनिर्दिष्ट किया जाना है। इस अनुसूची के प्रयोजनों के लिए, प्रतिभूत ऋण से कंपनी की आस्ति के विरुद्ध भागतः या पूर्णतः प्रतिभूत ऋण अभिप्रेत है।

अनुसूची-10

स्थिर अस्तियां

विशिष्टियां	लागत/सकल ब्लाक				अवक्षयण			शुद्ध ब्लाक	
	आरम्भिक	अभि-वृद्धियां	कटौतियां	अंतिम	पिछले वर्ष सक	वर्ष के लिए	विक्रय/समायोजन पर	अब तक	वर्ष के अंत पर
अच्छी साखें									
अमूर्त (विनिर्दिष्ट करें)									
भूमि-फ्री होल्ड									
पट्टे पर संपत्ति									
भवन									
फर्निचर और सज्जा									
सूचना प्रौद्योगिकी उपस्कर									
यान									
कार्यालय उपस्कर									
अन्य (प्रकृति विनिर्दिष्ट करें)									
योग									
पिछला वर्ष									

टिप्पण : उपर्युक्त भूमि, संपत्ति और भवन में शामिल की गई आस्तियों में अनुसूची 8 के टिप्पण (ड) में परिभासित विनिधान संपत्तियां शामिल नहीं हैं।

अनुसूची-11

नकदी और बैंक अतिरोध

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	नकदी (चेक, ड्राफ्ट और स्ट्रम्प सहित)		
2.	बैंक अतिरोध		
	(क) निक्षेप खाता		
	(क क) लघु अवधि (तुलनपत्र की तारीख से 12 मास के भीतर देय)		
	(ख ख) अन्य		
	(ख) चालू खाता		
	(ग) अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
3.	मांग पर और लघु अवधि पर धन		
	(क) बैंक में		
	(ख) अन्य संस्थाओं में		
4.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		
	उपर्युक्त 2 और 3 में शामिल किए गए गैर अनुसूचित बैंकों में अतिरोध		
	रोकड़ और बैंक अतिरोध		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	योग		

टिप्पण : बैंक अतिरोध में व्योहार में प्रेषण शामिल है। यदि ऐसा हो तो प्रकृति और रकम को पृथक्ता; दर्शाया जाना चाहिए।

अनुसूची-12

अंग्रेम और अन्य आस्तियां

	विशिष्टियां	चालू वर्ष '000 रु.	पूर्व वर्ष '000 रु.
	अंग्रेम		
1.	अध्यर्पित कंपनियों के पास आरक्षित निक्षेप		
2.	अध्यर्पित कंपनियों को अंग्रेम		
3.	विनिधान के लिए आवेदन धन		
4.	पूर्व अदायगियां		
5.	अधिकारियों/निदेशकों को अंग्रेम		
6.	भुगतान किया गया अंग्रेम कर और स्रोत पर काटे गए कर		
7.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग (अ)		
	अन्य आस्तियां		
1.	विनिधानों पर उद्भूत आय		
2.	बकाया प्रीमियम		
3.	अभिकर्ता अतिरोष		
4.	विदेशी अभिकरणों का अतिरोष		
5.	बीमा कारबार करने वाले अन्य निकायों से देय		
6.	अनुबंगियों/नियंत्री कंपनियों से देय		
7.	पुनर्बीमा दावे/प्राप्त किया जा सकने वाला अतिरोष		
8.	भारतीय रिजिव बैंक के पास निक्षेप [बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 7 के अनुसरण में]		
9.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग (आ)		
	योग (अ + आ)		

टिप्पणियां :

- (क) उपर्युक्त शीर्षों के अधीन मदों को सन्देहास्पद रकमों के लिए उपबंधों के शुद्ध के रूप में नहीं दर्शाया जाएगा। प्रत्येक शीर्ष के सामने उपबंध की रकम पृथक्कृतः दर्शाते ही जानी चाहिए।
- (ख) 'अधिकारी' पद का अर्थ कंपनी अधिनियम, 1956 में परिभाषित 'अधिकारी' शब्द के अनुरूप होना चाहिए।

अनुसूची-13

चालू दायित्व

	विशिष्टियां	चालू वर्ष '000 रु.	पूर्व वर्ष '000 रु.
1.	अभिकर्ताओं का अतिरोष		
2.	अन्य बीमा कंपनियों को देय अतिरोष		
3.	संधि कंपनियों से देय अंग्रेम		
4.	पुनर्बीमा अध्यर्पण पर धारित निक्षेप		
5.	अंग्रेम में प्राप्त प्रीमियम		
6.	विविध लेनदार		
7.	अनुबंगियों/नियंत्री कंपनियों को देय		
8.	बकाया दावे		
9.	देय वार्षिकी		
10.	अधिकारियों/निदेशकों को देय		
11.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

अनुसूची-14

उपबंध

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	कराधान के लिए (भुगतान और स्रोत पर काटा गया कर)		
2.	प्रस्तावित लाभांश के लिए		
3.	लाभांश वितरण कर के लिए		
4.	पालिसीधारकों को संदेय बोनस		
5.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

अनुसूची-15

प्रकीर्ण व्यय

(उस सीमा तक जो बट्टेखाते में नहीं ढाले गए हैं या समायोजित नहीं किए गए हैं)

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		'000 रु.	'000 रु.
1.	शेयरों और डिकेन्वरों पर अनुशेय छूट		
2.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

टिप्पण :

- (क) किसी भी मद को “प्रकीर्ण व्यय” शीर्ष के अन्तर्गत शामिल नहीं किया जाएगा और अग्रणीत नहीं किया जाएगा जब तक कि :
- (1) भविष्य में ऐसे व्यय से युक्तियुक्त रूप से कुछ फायदे की संभावना हो, और
 - (2) ऐसे फायदे की रकम को युक्तियुक्त रूप से आकलित किया जा सके।
- (ख) प्रकीर्ण व्यय शीर्ष के अन्तर्गत शामिल किसी भी मद के लिए व्यय से संबंधित अग्रणीत की रकम, संभावित भावी राजस्व/अन्य फायदों से अधिक नहीं होगी।

अनुसूची ख
(विनियम 3 देखें)

भाग 1

वित्तीय विवरणियों को तैयार करने के लिए लेखा सिद्धान्त

1. लेखा मानकों का लागू होना : बीमाकर्ता का प्रत्येक तुलनपत्र, प्राप्तियां और संदाय लेखा (नकद संब्यवहार विवरण) तथा लाभ-हानि लेखा (शेयरधारकों का लेखा) निम्नलिखित के सिवाय बीमाकर्ता को साधारण बीमा कारबार करने के लिए उस विस्तार तक लागू आई सी ए आई द्वारा जारी लेखा मानकों के अनुरूप होगा :-

(i) लेखा मानक 3 (ए एस 3) — नकद संब्यवहार विवरण—नकद संब्यवहार विवरण केवल प्रत्यक्ष पद्धति के अधीन ही तैयार किया जाएगा।

(ii) लेखा मानक 3 (ए एस 13) — विनिधानों के लिए लेखा लागू नहीं होगा।

(iii) लेखा मानक 17 (ए एस 17) — सिंगमेंट रिपोर्ट—क्या बीमाकर्ता की प्रतिभूतियों का सार्वजनिक रूप से लेन-देन होता है या नहीं, को ध्यान में लाए बिना लागू होगी।

2. प्रीमियम : प्रीमियम, संविदा अवधि की आय का जोखिम की अवधि, जो भी समुचित हो, के रूप में मान्य होगी। अनुपार्जित प्रीमियम और अग्रिम में प्राप्त प्रीमियम, दोनों ऐसी प्रीमियम आय को व्यपदिष्ट करती हैं जो चालू लेखा अवधि से संबंधित नहीं हैं, वित्तीय विवरणियों में पृथक् रूप से प्रकट किया जाएगा।

अनुपार्जित प्रीमियम को लिए आरक्षित, लिखित प्रीमियम के उस भाग की व्यपदिष्ट रकम के रूप में सूजित की जाएगी जिसे पूर्ववर्ती लेखा अवधि के लिए माना जा सकता है और आवंटित किया जाना है।

अग्रिम में प्राप्त ऐसी रकम, जो जोखिम प्रारंभ होने के पूर्व प्राप्त प्रीमियम को व्यपदिष्ट करती है, वित्तीय विवरणियों में “‘चालू दायित्वा’” कार्य के अंतर्गत पृथक् रूप से दर्शित की जाएगी।

अनुपार्जित प्रीमियम “‘चालू दायित्वा’” शीर्ष के अंतर्गत प्रथक् रूप से दर्शित किया जाएगा और निर्धारण के प्रबंधन आधार के बारे में, समुचित प्रकटन वित्तीय विवरणियों में किया जाएगा।

अग्रिम में प्राप्त प्रीमियम अनुपार्जित प्रीमियम में सम्मिलित किया जाएगा और उसे पृथक् रूप से दर्शित किया जाएगा।

प्रीमियम राजस्व मान्यता ऐसे जोखिम के पैटर्न पर आधारित है जिसे बीमाकर्ता अभिदर्शित करता है। पिछले अनुभवों के आधार पर बीमाकर्ता विशिष्ट प्रकार के बीमा कारबार को जोखिम के पैटर्न पर विश्वसनीय रूप से प्रावकलित कर सकता है। अधिकांश बीमाकर्ता समय बीत जाने के आधार पर लेखा के लिए प्रीमियम राजस्व लाते हैं। जहां घटनाओं का जोखिम आता है वहां साधारणतः यह समुचित है कि इस संबंध में, किसी विनियामक आदेश के अध्यधीन दावों को और बढ़ाने के लिए संपूर्ण पालिसी अवधि अधिक या कम होती है।

कुछ प्रकार के बीमा के लिए घटनाओं के परिणामस्वरूप समायोजित किए जाने वाले प्रीमियम के लिए यह सामान्य है और पालिसी अवधि अर्थात् समुद्री स्थोरा के दौरान या उसके पश्चात् पता लग जाता है। इसके अतिरिक्त, कुछ मामलों में अनेक प्रकार के जोखिम वाले, अर्थात् जोखिम कारकों को घटती-बढ़ती मात्रा वाले अवसंरचनात्मक प्रोजेक्ट के कारण जोखिम पैटर्न विस्तृत बीमा अवधि के लिए एक समान नहीं हो सकेगा। ऐसे मामलों में, जमा प्रीमियम पालिसी अवधि के प्रारंभ में संदर्भ किया जाता है और तत्पश्चात् समायोजित किया जाता है। अनुपार्जित प्रीमियम अवधारण का आधार बाहरी साक्ष्य जैसे बीमांकक और/या अन्य तकनीकी विशेषज्ञ के प्रमाणन द्वारा पर्याप्त रूप से न्यायानुमत, अधिमानतः समर्थित किया जाएगा। ऐसे आधार का समुचित प्रकटन किया जाएगा।

3. प्रीमियम कमी : प्रीमियम कमी मान्य होगी, यदि प्रत्याशित दावा लागत की राशि, संबद्ध खर्च और अनुरक्षण लागत संबद्ध अनुपार्जित प्रीमियमों से अधिक हो जाती है।

चार वर्ष से अधिक की संविदाओं के लिए, जब एक बार प्रीमियम कमी पाई गई हो तब दायित्व के लिए आगामी परिवर्तन बीमांकिक/तकनीकी मूल्यांकन पर आधारित होंगे।

4. अर्जन लागत : अर्जन लागतें, यदि कोई हों, उस अवधि के लिए खर्च की जाएंगी, जिसमें वह उपगत होती हैं। अर्जन लागतें वह लागत हैं जो घटती-बढ़ती रहती हैं और नई तथा नवीकृत बीमा संविदाओं के अर्जन से प्रारंभिक रूप से संबद्ध हैं। अधिकांश आवश्यक परीक्षा में बीमा संविदाओं की लागतें और निष्पादन के बीच आध्यताकारी संबंध हैं (अर्थात् जोखिम का प्रारंभ)।

5. दावे : बीमाकर्ता के दावों की अंतिम लागत के बटक में पालिसी और दावा निपटन लागतों के अंतर्गत के दावे समाविष्ट हैं। पालिसियों के अंतर्गत के दावों में उपगत हानियों के लिए किए गए दावे समाविष्ट हैं और वे पालिसी के अंतर्गत प्राक्कलित या प्रत्याशित होते हैं।

बकाया दावों के दायित्व प्रत्यक्ष कारबार और आवक पुनर्बीमा कारबार दोनों, की बाबत लेखा के लिए लौ जाएंगी। दायित्व में निम्नलिखित सम्प्रिलित होगा :-

(क) असंदर्भ रिपोर्ट किए गए दावों के संबंध में भावी संदाय।

(ख) उपगत दावे किन्तु रिपोर्ट न किए गए (आई बी एन आर) जिसमें पर्याप्त आरक्षिती भी हैं (कई बार उपगत दावे हों किन्तु जो पर्याप्त रूप से रिपोर्ट न किए गए हों, के रूप में निर्दिष्ट किए जाते हैं)

जिसका परिणाम यह होगा कि ऐसे दावों के मद्दे दावों को तय करने के लिए भावी नकद आस्ति बाहर ले जाती है। प्राक्कलित दायित्व में परिवर्तन पालिसी के अंतर्गत दावों, आहे प्रारंभ में और द्वितीय अवधि के अंत में देय या प्रज्ञापित हों, की बाबत बकाया दावों के लिए प्राक्कलित दायित्व के बीच अंतर व्यपदिष्ट करता है। लेखा प्राक्कलित उद्धारण मूल्य के लिए समायोजित दावा लागत भी सम्मिलित है यदि वहां इसके आपन की अभिनिश्चितता की पर्याप्त स्थिति हों।

कुछ मामलों में-दावा दायित्व का बीमांकिक मूल्यांकन

चार वर्ष से अनधिक अवधि की संविदा की बाबत किए गए दावों का प्राक्कलित विनियमों के अध्यधीन, जैसा प्राधिकरण द्वारा विहित किया जाए, बीमांकिक आधार पर मान्य होगा। ऐसे मामलों में दायित्व निर्धारण के औचित्य के बारे में मान्यताप्राप्त बीमांकक से एक प्रमाणपत्र प्राप्त करना चाहिए। बीमांकिक की धारणा लेखा के टिप्पणियों के रूप में पर्याप्त रूप से प्रकट की जाएगी।

अनवसित जोखिम के आवश्यक उपबन्ध किसी न्यूनतम कानूनी अपेक्षा के अधीन किए जाएंगे।

6. विनिधानों के मूल्य को अवधारित करने की प्रक्रिया : बीमाकर्ता निम्नलिखित रीति से विनिधानों के मूल्यों को अवधारित करेगा:-

(क) अचल संपत्ति-विनिधान संपत्ति : विनिधान संपत्ति पिछली लागत घटाकर संचित अवक्षयण और हास हानि शून्य समझे जा रहे अवशिष्ट मूल्य के आधार पर मापा जाएगा और कोई भी पुनर्मूल्यांकन अनुज्ञेय नहीं है।

बीमाकर्ता प्रत्येक तुलन पत्र तारीख को यह निर्धारण करेगा कि क्या किसी विनिहित संपत्ति का हास किया गया है।

हास हानि तत्काल राजस्व/हानि और हानि लेखा में खर्चों के रूप में मान्य होगी।

उचित मूल्य जैसा तुलनपत्र तारीख में है और उसमें अवधारण के आधार पर वित्तीय विवरण में अतिरिक्त जानकारी के रूप में प्रकट किया जाएगा।

(ख) प्रतिभूतियां ऋण : प्रतिभूति ऋण में सरकारी प्रतिभूतियां सम्मिलित हैं और मोर्चनीय अधिमानी शेयर “परिपक्षता धारित” प्रतिभूतियों के रूप में समझी जाएंगी और क्रमिक अपाकरण के अध्यधीन पिछली लागत पर मापी जाएंगी।

(ग) ईकिटी प्रतिभूतियां और व्युत्पन्नी लिखतें जिनका सक्रिय बाजार में व्यापार किया जाता है : सूचीबद्ध ऐसी ईकिटी प्रतिभूतियां और व्युत्पन्नी लिखतें, जिनका सक्रिय बाजारों में व्यापार किया जाता है, तुलनपत्र तारीख के रूप में उचित मूल्य पर मापी जाएंगी। उचित मूल्य की गणना करने के प्रयोजन के लिए ऐसे स्टॉक एक्सचेंज, जहां प्रतिभूतियां सूचीबद्ध की जाती हैं, की कोट की गई अंतिम कीमत को लिया जाएगा।

बीमाकर्ता प्रत्येक तुलनपत्र तारीख पर यह निर्धारण करेगा कि क्या सूचीबद्ध ईकिवटी प्रतिभूति (प्रतिभूतियों)/व्युत्पन्नी लिखतों का हास हुआ है।

सक्रिय बाजार से ऐसे बाजार अधिग्रेत हैं जहाँ प्रतिभूतियों के इच्छुक क्रेता को उपलब्ध पर व्यापार किया जाता है और इच्छुक विक्रेता सामान्य होते हैं तथा कीमतें सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होती हैं।

सूचीबद्ध ईकिवटी शेयरों और व्युत्पन्नी लिखतों के उचित मूल्य में परिवर्तन के कारण उद्भूत अप्राप्त अभिलाभ/हानियाँ “उचित मूल्य परिवर्तन लेखा” शीर्ष के अंतर्गत और लाभ हानि लेखा की रिपोर्ट किए गए आपन पर ईकिवटी के लिए सी जाएंगी। विशिष्ट प्रतिभूति की बाबत और उस सूचीबद्ध प्रतिभूति के वास्तविक विक्रय पर लाभ-हानि लेखा को पुनः नियमित रूप से करने के लिए, यथास्थिति, “विनिधानों के विक्रय पर लाभ” या “विनिधानों के विक्रय पर हानि” को उचित मूल्य परिवर्तन लेखा शीर्ष के अंतर्गत ईकिवटी में पहले मान्य उचित मूल्य में संचित परिवर्तनों में सम्पादित किया जाएगा।

शंकाओं को दूर करने के लिए, यह स्पष्ट किया जाता है कि अतिशेष या उसका कोई भाग लाभांश के रूप में वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होगा। और, उक्त उचित मूल्य परिवर्तन लेखा में किसी विकलित अतिशेष की लाभांश की घोषण करते समय, लाभ/निःशुल्क आरक्षिती से कमी की जाएगी।

बीमाकर्ता प्रत्येक तुलन पत्र तारीख पर यह निर्धारित करेगा कि क्या कोई हास हुआ है। हास, हानि प्रतिभूति/विनिधान के पुनः मापित उचित मूल्य और उसके अर्जन के बीच अंतर के विस्तार तक राजस्व/लाभ-हानि लेखा के रूप में मान्य होगा जैसी राजस्व/लाभ-हानि लेखा में खर्च के रूप में मान्य किसी पूर्व हास हानि द्वारा कमी गई है।

हास हानि, राजस्व/लाभ और हानि में पहले मान्य का उल्टा जाना राजस्व/लाभ-हानि लेखा में मान्य होगा।

(घ) असूचीबद्ध और सक्रिय रूप से व्यापार किए गए ईकिवटी प्रतिभूतियों और व्युत्पन्नी लिखतों के सिवाय : असूचीबद्ध ईकिवटी प्रतिभूतियाँ और व्युत्पन्नी लिखतें तथा ऐसी सूचीबद्ध ईकिवटी प्रतिभूतियाँ और व्युत्पन्नी लिखतें, जिनका सक्रिय बाजार में नियमित रूप से व्यापार नहीं किया जाता है, पिछली लागतों पर मापी जाएंगी। ऐसे विनिधानों के मूल्य में कमी के लिए प्रावधान किया जाएगा। इस प्रकार, किए गए प्रावधान पश्चात्वर्ती अवधि में उलट दिए जाएंगे यदि बाहरी साक्ष्य पर आधारित प्राक्कलन उस संपूर्ण रकम पर विनिधान के मूल्य में वृद्धि दर्शित करते हैं। प्रावधान के उलटे जाने के कारण विनिधान की रकम की वृद्धि पिछली लागत से अधिक नहीं होगी।

इस विनियम के प्रयोजन के लिए, प्रतिभूति तब सक्रिय रूप से व्यापार करने वाली नहीं समझी जाएगी यदि उसका व्यापार अंक पिछले 12 महीनों के दौरान किसी व्यापारिक सत्र में 10 हजार यूनिटों से अधिक नहीं हुआ हो।

7. ऋण : ऋण हास उपबंधों के अध्यधीन पिछली लागत पर मापा जाएगा।

बीमाकर्ता अपनी ऋण आस्तियों की क्षमालियों का निर्धारण करेगा और हास के लिए उपलब्ध कराएगा, हास प्रावधान 20 प्रतिशत की कुल रकम से कम नहीं होगा जो नीचे उल्लिखित प्रकृति की श्रुटियों के अध्यधीन होता हो :-

(i) छह मास की अवधि से अधिक के लिए असंदर्भ व्याज शेष हैं।

(ii) देय होने वाली ऋण की किसी और पिछले छह मास की अवधि के दौरान शेष असंदर्भ।

8. विभीषिका आरक्षिती : विभीषिका आरक्षिती प्राधिकरण द्वारा विहित सन्नियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सूजित की जाएंगी। विभीषिका आरक्षिती में से निधियों का विनिधान प्राधिकरण के चिरभोग के अनुसार किया जाएगा।

यह स्पष्ट किया जाता है कि यह आरक्षिती हानियों को पूरा करने के लिए होती है, जो किसी संपूर्ण रूप से अप्रत्याशित घटना और किसी विनिर्दिष्ट ज्ञात प्रयोजन के लिए नहीं, के कारण उद्भूत होती है। यह आरक्षिती प्रवृत्त बीमा पालिसियों के मद्दे संभान्य भावी दायित्व के लिए अलग रखी गई रकम होती है।

भाग 2

विस्तृत विवरणों का भाग रूप प्रकटन

क. निम्नलिखित को सुलनपत्र की टिप्पणियों के रूप में प्रकट किया जाएगा :-

1. समाप्ति दायित्व :

- (क) भागतः समादत्त विनिधान
- (ख) निम्नांकन प्रतिबद्धता बकाया
- (ग) ऐसे दाके, जो पालिसियों के अंतर्गत के सिवाय हैं, जो नियतन के रूप में प्राप्त नहीं किए गए हैं
- (घ) कंपनी द्वारा या उसकी ओर से दी गई गारंटी
- (ङ) कानूनी मांग/विवादित दायित्व जिन के लिए उपबंध नहीं हैं
- (च) पुनर्बीमा दायित्व
- (छ) अन्य (जो विनिर्दिष्ट किए जाएंगे)।

2. भारत के भीतर और बाहर कंपनी की आस्तियों के विलंगम।

3. ऋणों, विनिधानों और स्थिर आस्तियों के लिए की गई प्रतिबद्धता तथा बकाया।

4. भारत में/भारत से बाहर दावेदार को संदत्त दावे, पुनर्बीमा घटाइए।

5. चार वर्ष से अधिक की पालिसियों की दशा में, दावा दायित्वों के लिए बीमांकिक धारणा।

6. दावों की अवधि-छह मास से अधिक और अन्य दावों के लिए बकाया दावों के बीच सुभिन्नता।

7. भारत में/भारत से बाहर कारबार से लिखित प्रीमियमों, पुनर्बीमा घटाइए।

8. मान्य प्रीमियम आय का परिमाण, परिवर्तित जोखिम पैटर्न पर आधारित, प्रवर्गधार, उसके आधार और न्यायोचित्य जिसमें चाहे बाहरी साक्ष्य पर विश्वास किया गया हो।

9. निम्नलिखित के लिए विनिधानों के संबंध में संविदाओं का मूल्य :

(क) क्रय जहां परिदान किया जना है।

(ख) विक्रय जहां संदाय अतिशोध होता है।

10. बीमा कारबार से संबंधित आपरेटिंग खर्चें : कारबार के विभिन्न बगों के लिए व्यय के आवंटन पर आधारित।

11. ऐसे विनिधान जिनकी उचित मूल्य आधार पर कीमत निर्धारित की जाती है, की पिछली लागत।

12. प्रबंधकीय पारिश्रमिक की संगणना।

13. विचलित प्रतिभूतियों के क्रमिक अभ्याकरण के आधार पर।

14. (क) सूचीबद्ध ईक्विटी शेयरों और व्युत्पन्नी लिखतों के उचित मूल्य में परिवर्तन के कारण बसूल न किए गए अभिलाभ/हानियां "उचित मूल्य परिवर्तन लेखा" शीर्ष के अंतर्गत और लाभ-हानि लेखा में रिपोर्ट किए गए आपन पर ईक्विटी के लिए ली जाती हैं।

(ख) लंबित ज्ञापन, उचित मूल्य परिवर्तन लेखा में जमा शेष वितरण के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

15. विनिधान संपत्ति का उचित मूल्य और उसका आधार।

16. तय किए गए दावे और तुलनपत्र की तारीख पर छह मास से अधिक की अवधि के लिए शेष बकाया।

ख. निम्नलिखित लेखा नीतियां वित्तीय विवरणों के अभिन्न भाग के रूप होंगी :

1. आई सी ए आई द्वारा जारी किए गए लेखा मानकों के निबंधनों में महत्वपूर्ण लेखा नीतियां तथा लेखा सिद्धान्तों के भाग 1 में महत्वपूर्ण सिद्धान्त और नीतियां दी गई हैं। बीमाकर्ता द्वारा अनुसरण की गई कोई अन्य लेखा नीतियां, आई सी ए आई द्वारा जारी किए गए लेखा मानक ए एस 1 के अन्तर्गत अपेक्षित रीति में कथित की जाएंगी।

2. यथापूर्वोक्त लेखा नीतियों से हटाई गई नीतियों को ऐसे हटाने के कारणों को पृथक् रूप से प्रकट किया जाएगा।

ग. निम्नलिखित जानकारी भी प्रकट की जाएगी :-

1. किसी कानूनी अपेक्षा के अनुसार किए गए विनिधान को उसकी रकम, प्रकृति, प्रतिभूति और भारत में और भारत के बाहर किसी विशेष अधिकार के साथ पृथक् रूप से प्रकट किया जाएगा।

2. प्राधिकरण द्वारा जारी निदेशों, यदि कोई हो, के अनुसार आय के प्रयोजन के लिए पूरा करने वाले/पूरा न करने वाले विनिधान में पृथक्करण।

3. सैक्टर-वार कारबार की प्रतिशतता।

4. पिछले पांच वर्ष के लिए वित्तीय विवरण का सारांश, ऐसी रीति में, जैसी प्राधिकरण द्वारा विहित की जाए।

5. लेखा अनुपात जैसा प्राधिकरण द्वारा विहित किया जाए।

6. राजस्व लेखा और लाभ-हानि लेखा के बीच ब्याज, लाभांश और किराए के आबंटन का आधार।

भाग 3

वित्तीय विवरणियां तैयार करने के लिए साधारण अनुदेश

1. तुलन पत्र, राजस्व लेखा, लाभ और हानि में दर्शित सभी मदों के लिए ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की तत्स्थानी रकम दी जानी चाहिए।

2. वित्तीय विवरणों में अंकों को निकटतम हजार पर पूर्णांकित किया जाएगा।

3. विनिधान से संबंधित वसूली योग्य ब्याज, लाभांश और किराया सकल मूल्य में दिया जाना चाहिए, स्रोत पर आय कर कटौती की रकम “अग्रिम संदत कर” के अंतर्गत सम्मिलित की जाए।

4. किराए की आय को राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

5. (I) जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, वित्तीय विवरणियों के प्रयोजन के लिए -

(क) “प्रावधान” पद नीचे टिप्पण 2 के अध्यधीन से आस्तियों के मूल्य में अवक्षयण, नवीकरण या कमी प्रदान करके अपलिखित या प्रतिधारित या किसी ऐसे ज्ञात दायित्व या हानि, जिसकी रकम सारबान् शुद्धता के साथ अवधारित नहीं की जा सकती है, को प्रदान करके प्रतिधारित कोई रकम अभिप्रेत है।

(ख) यथापूर्वोक्त के अध्यधीन, “आरक्षिती” पद में आस्तियों के मूल्य में अवक्षयण, नवीकरण या कमी प्रदान करके अपलिखित या प्रतिधारित या किसी ज्ञात दायित्व को प्रदान करके प्रतिधारित कोई भी रकम सम्मिलित नहीं की जाएगी।

(ग) “पूंजी आरक्षिति” पद में लाभ-हानि लेखा के माध्यम से निःशुल्क वितरण के लिए रखी गई कोई भी सम्मिलित नहीं होगी और “राजस्व आरक्षिती” पद से पूंजी आरक्षिती के सिवाय कोई भी आरक्षिती अभिप्रेत है।

(घ) “दायित्व” पद में संविदागत व्यय सभी विवादित या समाश्रित दायित्वों की बाबत सभी दायित्व सम्मिलित किए जाएंगे।

(II) जहाँ :-

(क) आस्ति के मूल्य में अवक्षयण, नवीकरण या कमी प्रदान करके कोई रकम अपलिखित या प्रतिधारित की जाती है; या

(ख) किसी ज्ञात दायित्व को प्रदान करके प्रतिधारित कोई भी रकम उस रकम से अधिक है जिसमें निदेशकों की राय इस प्रयोजन के लिए युक्तियुक्त समझी जाती है, आधिक्य आरक्षिती के रूप में और न कि प्रावधान के रूप में इन लेखाओं के प्रयोजन के लिए समझा जाएगा।

6. कंपनी को वहाँ विधि वाद के अधीन उपबंध करने चाहिए जहाँ प्रबंध-तंत्र की यह राय है कि पंचाट बीमाकर्ता के विरुद्ध जा सकता है।

7. कानूनी उपबंध, यदि कोई हो, के आधिक्य में कल्पित जोखिम को अंतर्वलित प्रीमियरों और जोखिम थाली रकम को उपदिशित करते हुए, पृथक् रूप से प्रकट किया जाएगा तथापि, संपरीक्षक उस संबंध में, अपनी रिपोर्ट में सम्मुचित विशेषक देगा।

8. लाभ-हानि लेखा का कोई विकल्प अतिशेष, अप्रतिबद्ध आरक्षिती से कटौती के रूप में दर्शित किया जाएगा और अतिशेष, यदि कोई हो, पृथक् रूप से दर्शित किया जाएगा।

भाग 4

प्रबंध-तंत्र की रिपोर्ट की विषय-वस्तु

विस्तीय विवरणों, प्रबंध-तंत्र रिपोर्ट को संलग्न किया जाएगा जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ प्रबंध-तंत्र द्वारा सम्यक् रूप से अधिप्रमाणित निम्नलिखित अंतर्विष्ट होंगे :

1. प्राधिकरण द्वारा अनुदास रजिस्ट्रीकरण की निरंतर विधिमान्यता के बारे में पुष्टि।

2. यह प्रमाणन कि कानूनी प्राधिकारियों को शोध्य सभी देय सम्यक् रूप से संदत्त कर दिए हैं।

3. इस आशय की पुष्टि कि वर्ष के दौरान शेयरधारण का पैटर्न और शेयरों का अंतरण कानूनी और विनियामक अपेक्षाओं के अनुसार है।

4. यह घोषणा कि प्रबंध-तंत्र ने भारत में जारी की गई पालिसियों के धारकों की निधियां प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः भारत के बाहर विनिहित नहीं की गई हैं;

5. इस बात की पुष्टि कि अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन रखा गया है।

6. इस आशय का प्रमाणन कि सभी आस्तियों के मूल्य का तुलनपत्र की तारीख को पुनर्विलोकन कर दिया है और यह उसके (बीमाकर्ता) के विश्वास से तुलनपत्र में वर्णित आस्तियां विभिन्न शीर्षों—“ऋणों”, “विनिधानों”, “एंजेंट अतिशेष”, “बकाया प्रीमियम”, “ब्याज, लाभांश और बकाया किराया”, “ब्याज, किराया और प्रतिभूत किराया किन्तु जो देय नहीं है”, “बीमा कारबार करने वाले अन्य व्यक्तियों या निकायों से देय रकम”, “अन्यान्य ऋणी”, “वसूली योग्य बिल” और “अन्य लेखाओं” के अंतर्गत विनिर्दिष्ट विभिन्न मदों के अंतर्गत उनका वसूली योग्य या बाजार मूल्य से अधिक, कुल रकम में दर्शित किए जाते हैं।

7. इस आशय का प्रमाणपत्र कि जीवन बीमा निधि के उपयोजन और विनिधान से संबंधित जीवन बीमा निधि के किसी भी भाग को, बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) के उपबंधों के उल्लंघन में प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः लागू नहीं किया गया है।

8. संपूर्ण अभिदर्शित जोखिम और उसमें कमी करने के लिए अंगीकृत रणनीति के बारे, प्रकटन।

9. देय का जोखिम और अभिदर्शन जोखिम और अंगीकृत रणनीति की व्यवस्था के प्रावकलन को देते हुए, पृथक् विवरण के साथ अन्य देशों, यदि कोई, में प्रचालन।

10. पूर्ववर्ती पांच वर्ष के दौरान औसत दावा निपटन समय में प्रवृत्ति उपदर्शित करते हुए, दावों की अवधि।

11. इस आशय का एक प्रमाणन कि विनिधानों और स्टाकों और शेयरों के तुलनपत्र में यथा दर्शित मूल्यों को कैसे प्राप्त किया जाए और कैसे उसके बाजार मूल्य को इस प्रकार दर्शित मूल्यों के साथ तुलना करने के प्रयोजन के लिए अभिनिश्चित किया गया है।

12. आस्ति ब्वालिटी और पोर्टफोलियो के निबंधनों में विनिधान का अनुपालन, का पुनर्विलोकन अर्थात् अबल संपत्ति, ऋण, विनिधान आदि के निबंधनों को पृथक् रूप से।

13. निम्नलिखित में यह उपदर्शित करते हुए, एक उत्तरदायी विवरण :

(i) वित्तीय विवरणों को तैयार करने में, लागू लेखा मानकों, सिद्धान्तों और नीतियों का, तात्विक विचलन से संबंधित उचित स्पष्टीकरण के साथ अनुसरण किया गया है।

(ii) प्रबंध-तंत्र ने लेखा नीतियां स्वीकार की हैं और उन्हें संगत रूप से लागू किया गया है और किए गए निर्णय और प्रावकलन युक्तियुक्त और प्रकायुक्त हैं ताकि वित्तीय वर्ष के अंत में कंपनी के कार्यकलापों का और वर्ष के लिए कंपनी में आपरेटिंग लाभ या हानि और लाभ या हानि को सही और उचित रूप से दिया जा सके।

(iii) प्रबंध-तंत्र ने कंपनी की आस्तियों को सुरक्षित करने के लिए धोखा की रोकथाम और उस का पता लगाने और अन्य अनियमितताओं के लिए कंपनी अधिनियम, 1938 (1938 का 4)/कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के लागू उपबंधों के अनुसार, पर्याप्त लेखा अभिलेखों के रखरखाव के लिए उचित और पर्याप्त सावधानी बरती है।

(iv) प्रबंध-तंत्र ने चालू समुत्थान आधार पर वित्तीय विवरणों को तैयार कर लिया है।

(v) प्रबंध-तंत्र ने यह सुनिश्चित किया है कि आंतरिक संपरीक्षा प्रणाली नियमान कारबार के आकार और प्रकृति के अनुरूप है और प्रभावी रूप से कार्य कर रही है।

भाग 5

वित्तीय विवरणियों को तैयार करना

(1) बीमाकर्ता राजस्व लेखा, लाभ और हानि लेखा (शेयरधारकों का लेखा) और प्ररूप ख-आर ए, प्ररूप बी-पी एल और प्ररूप ख-बी एस या उन परिस्थितियों में यथासाध्य अनुज्ञात किया जाए, में तुलनपत्र तैयार करेगा।

(2) बीमाकर्ता आई सी ए आई द्वारा जारी ए एस-3 "नकद संव्यवहार विवरण" में विहित सीधी पद्धति के अनुसार, पृथक् प्राप्तियाँ और संदाय लेखा तैयार करेगा।

प्ररूप ख-आर ए (राजस्व लेखा)

बीमाकर्ता का नाम :

रजिस्ट्रीकरण सं. और आई आर डी ए में रजिस्ट्रीकरण की तारीख

31 मार्च, 20..... को समाप्त हुए वर्ष के लिए राजस्व लेखा

(अग्नि, समुद्री और प्रकीर्ण बीमा पृथक् रूप से तैयार किया जाना है)

विशिष्टियाँ	अनुसूची ('000 रु.)	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
1. अनुपार्जित प्रीमियम (शुद्ध)	1		
2. अन्य (विनिर्दिष्ट करें)			
3. अनवसित जोखिम के उपबंध में परिवर्तन			
4. व्याज, लाभांश और किराया-सकल कुल योग-(क)			
1. उपगत दावा (शुद्ध)	2		
2. कमीशन	3		
3. बीमा कारबार से संबंधित प्रचालन खर्चें	4		
4. अन्य-विनिर्दिष्ट किए जाएं योग (ख)			
अग्नि/समुद्री/प्रकीर्ण कारबार के प्रचालन के लाभ/हानि (क-ख)			

प्ररूप ख-पी एल (लाभ और हानि)

बीमाकर्ता का नाम :

रजिस्ट्रीकरण सं. और आई आर डी ए में रजिस्ट्रीकरण की तारीख

31 मार्च, 20..... को समाप्त हुए वर्ष के लिए लाभ-हानि लेखा

विशिष्टियाँ	अनुसूची ('000 रु.)	आलू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
1. आपरेटिंग लाभ (हानि)			
(क) अन्न बीमा			
(ख) समुद्री बीमा			
(ग) प्रकौण बीमा			
2. विनिधान से आय			
(क) व्याज, लाभांश और किराया-सकल			
(ख) विनिधानों के विक्रय पर लाभ घटाइए : विनिधानों के विक्रय पर हानि			
3. अन्य आय (विनिर्दिष्ट करे)			
योग (क)			
4. प्रावधान (कराधान से भिन्न)			
(क) विनिधानों के मूल्य में कमी			
(ख) अन्य (विनिर्दिष्ट करे)			
5. अन्य खर्चे			
(क) बीमा कारबार से सेवीधत भिन्न खर्चे			
(ख) अन्य (विनिर्दिष्ट करे)			
योग (ख)			
कर से पूछे लाभ			
कराधान के लिए प्रावधान			
कर के पश्चात लाभ			
घटाइए: विभीषिका आरक्षितो*			
विनियोग के लिए उपलब्ध लाभ			
विनियोग			
(क) वर्ष के दौरान संदर्भ अंतर्रम लाभांश			
(ख) प्रस्तावित अंतिम लाभांश			
(ग) लाभांश वितरण कर			
(घ) किसी आरक्षितो या अन्य लेखाओं में अंतरण (विनिर्दिष्ट करे)			
पिछले वर्ष से अग्रनोत लाभ/हानि का अंतिशेष			
तुलनपत्र के लिए अग्रनोत अंतिशेष			

* विभीषिका विनियोग में संचित कमी रु. लंबित अधिशेष।

प्ररूप ख-बी एल (तुलन पत्र)

बीमाकर्ता का नाम :

रजिस्ट्रीकरण सं. और आई आर डी ए में रजिस्ट्रीकरण की तारीख

31 मार्च, 20..... को तुलन पत्र

विशिष्टियां		अनुसूची	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		('000 रु.)	('000 रु.)	
निधियों का स्रोत				
शेयर पूँजी	5			
आरक्षितियां और अधिशेष	6			
उचित मूल्य परिवर्तन लेखा				
उधार	7			
योग				
निधियों का उपयोजन				
विनिधान	8			
ऋण	9			
स्थिर आस्तियां	10			
नकदी और बैंक अंतिशेष	11			
अग्रिम और अन्य आस्तियां	12			
उप-योग (क)				
चालू दार्यित्व	13			
उपबंध	14			
उप-योग (ख)				
कुल चालू आस्तियां (ग) = (क - ख)				
प्रकीर्ण व्यय (उस सीमा तक जिस तक अपलिखित और समायोजित न किए जाएं)	15			
लाभ-हानि लेखा में विकलन अंतिशेष				
योग				

समाप्ति दायित्व

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
1.	भागतः समादत्त विनिधान		
2.	ऐसे दावे, जो पालिसी के मद्दे नहीं हैं, कंपनी द्वारा ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किए जाएंगे।		
3.	निम्नांकन प्रतिबद्धता बकाया		
4.	कंपनी द्वारा या उसकी ओर से दी गई गारंटी		
5.	विवाद में कानूनी मांग/दायित्व, जो निम्नलिखित के लिए उपबंधित नहीं हैं		
6.	पुनर्बीमा आध्यताएँ		
7.	अन्य (जो विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	योग		

वित्तीय विवरणों की भाग रूप अनुसूचियां :

अनुसूची-1

अनुपार्जित प्रीमियम (शुद्ध)

विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
लिखित प्रत्यक्ष कारबार से प्रीमियम	—	
जोड़े : स्वीकृत पुनर्बीमा पर प्रीमियम		
घटाएँ : अध्यर्पित पुनर्बीमा पर प्रीमियम	—	
शुद्ध प्रीमियम		
अनुपार्जित प्रीमियम में परिवर्तन के लिए समायोजन		
अग्रिम में प्राप्त प्रीमियम में परिवर्तन के लिए समायोजन		
कुल उपार्जित प्रीमियम (शुद्ध)		

प्रभावित कारबार से प्रीमियम आय		
भारत में		
भारत के बाहर		
कुल उपार्जित प्रीमियम (शुद्ध)		

टिप्पण :

- (क) उपार्जित कुल प्रीमियम के 10 प्रतिशत से अधिक बीमा कारबार के किसी सेगमेंट की दशा में, यदि प्रीमियम पुनर्बीमा से कम है तो उसे पृथक् रूप से दर्शित किया जाएगा।
- (ख) पुनर्बीमा प्रीमियम शीर्ष के अधीन काटे गए कमीशन से पूर्व पुनर्बीमा प्रीमियम चाहे अध्यर्पित कारबार या स्वीकृत कारबार लेखा में लिए जाने हों।

अनुसूची-2

उपगत दावे (शुद्ध)

विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
संदत्त दावे		
सीधे		
जोड़िए : स्थीकृत पुनर्बीमा		
घटाइए : अध्यार्पित पुनर्बीमा		
संदत्त शुद्ध दावे		
उपगत कुल दावे		
दावेदारों को संदत्त दावे :		
भारत में		
भारत के बाहर		
उपगत कुल दावे		

टिप्पण :

- (क) ऐसे दावे, जो उपगत किए गए हों किन्तु रिपोर्ट नहीं किए गए हों, (आई बी एन आर)। उपगत किए गए हों किन्तु पर्याप्त रूप से रिपोर्ट नहीं किए गए हों, (आई बी एन ई आर)। दावों की रूपमें सम्मिलित किए जाएंगे।
- (ख) दावों में दावा निपटान लागत भी सम्मिलित है।
- (ग) सर्वेक्षक फीस, विधिक और अन्य खर्चें भी दावा लागत के भाग रूप होंगे।
- (घ) दावों की लागत प्रावक्षिलित उद्धारण मूल्य के लिए समायोजित की जाएगी यदि उसकी वसूली की पर्याप्त निश्चितता है।

अनुसूची-3

कमीशन-

विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
संदत्त कमीशन		
सीधे		
जोड़े : स्थीकृत पुनर्बीमा		
घटाएं : अध्यार्पित पुनर्बीमा पर कमीशन		
शुद्ध कमीशन		

टिप्पण :

लाभ/कमीशन यदि कोई हो, स्थीकृत पुनर्बीमा या अध्यार्पित पुनर्बीमा अंकों में सम्मिलित किया जाना है।

अनुसूची-4

बीमा कारबाहर से संबंधित प्रचालन खर्चें

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 ₹.)	पूर्व वर्ष ('000 ₹.)
1.	कर्मचारियों के पारिश्रमिक और कल्याण फायदे		
2.	प्रबंधकीय पारिश्रमिक		
3.	यात्रा, सवारी और बाहन चलाने के खर्चें		
4.	किराया, रेट और कर		
5.	मरम्मत		
6.	मुद्रण और लेखन सामग्री		
7.	संसूचना		
8.	विधिक और वृत्तिक प्रभार		
9.	चिकित्सा फीस		
10.	संपरीक्षक की फीस, खर्चें आदि (क) संपरीक्षक के रूप में (ख) निम्नलिखित की बाबत सलाहकार या किसी अन्य हैसियत के रूप में (i) कराधान विषय (ii) बीमा विषय (iii) प्रबंधन सेवाएं; और (ग) किसी अन्य हैसियत में		
11.	विज्ञापन और प्रचार		
12.	ब्याज और बैंक प्रभार		
13.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
14.	अवधेयण		
	योग		

टिप्पण :

- (क) शुद्ध प्रीमियम के एक प्रतिशत से अधिक या 5,00,000 रुपए, जो भी उच्चतर हों, के खर्चे के मद्दे पृथक् लाइन मद के रूप में दर्शित की जाएगी।
(ख) "अन्य शीर्ष" उपशीर्ष के अधीन, प्रचालन खर्चें (बीमा कारबाहर) विदेशी मुद्रा अभिलाभों या हानियों और अन्य मद्दे जैसी मद्दे भी सम्मिलित की जाएंगी।

अनुसूची-5

शेयर पूँजी

	विविधियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		('000 रु.)	('000 रु.)
1.	प्राधिकृत पूँजी		
रु. के प्रत्येक ईक्विटी शेयर		
2.	निर्गमित पूँजी		
रु. के प्रत्येक ईक्विटी शेयर		
3.	प्रतिश्रुत पूँजी		
रु. के प्रत्येक ईक्विटी शेयर		
4.	आहुत पूँजी		
रु. के प्रत्येक ईक्विटी शेयर		
5.	घटाइए : असंदेत मांग		
	जोड़े : समपहत शेयर (मूलतः समादत्त रकम)		
	घटाइए : प्रारंभिक खर्च		
	घटाइए : ऐसे खर्च, जिनमें कमीशन या हामीदारी पर दलाली या शेयरों की प्रतिश्रुति		
	योग		

टिप्पण :

- (क) बोनस शेयरों के निर्गम के कारण पूँजीकृत रकम प्रकट की जानी चाहिए।
 (ख) यदि पूँजी का कोई भाग नियंत्री कंपनी द्वारा रोक लिया जाता है तो उसे पृथक् रूप से दर्शित किया जाएगा।

अनुसूची-5क

शेयर पूँजी

शेयर धारण करने का पैटर्न रु.²

(जैसा प्रबंध-तंत्र द्वारा प्रमाणित किया जाए)

शेयरधारक	वर्तमान वर्ष		पूर्व वर्ष	
	शेयरों की सं.	धारण का %	शेयरों की सं.	धारण का %
संप्रवर्तक				
• भारतीय				
• विदेशी				
अन्य				
योग				

अनुसूची-6

आरक्षिती और अधिशेष

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		('000 रु.)	('000 रु.)
1.	पूंजी आरक्षिति		
2.	पूंजी मोचन आरक्षिति		
3.	शेयर प्रीमियम		
4.	साधारण आरक्षिति घटाइए : लाभ और हानि लेखा, यदि कोई हो, में विकलन अतिशेष घटाइए : क्रय द्वारा वापसी के लिए उपयोग की गई रकम		
5.	विभीषिका आरक्षिति		
6.	अन्य आरक्षितियां (विनिर्दिष्ट करें)		
7.	लाभ और हानि लेखा में लाभ का अतिशेष		
	योग		

टिप्पण :

आरक्षितियों में परिवर्धन और कठौती प्रत्येक विनिर्दिष्ट शीर्ष के अधीन प्रकट की जाएगी।

अनुसूची-7

उधार

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		('000 रु.)	('000 रु.)
1.	डिबेन्चर/बंधपत्र		
2.	सावधि जमा		
3.	बैंक		
4.	वित्तीय संस्थाएं		
5.	बीमा कारबार करने वाले अन्य निकाय		
6.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

टिप्पण :

(क) उस विस्तार तक, जिस तक उधार सुरक्षित है, प्रत्येक उपशीर्ष के अधीन प्रतिभूति की प्रकृति को पृथक् रूप से प्रकट किया जाएगा।

(ख) तुलनपत्र की तारीख से 12 मास के भीतर देय रकम पृथक् रूप से दर्शित की जाएगी।

अनुसूची-8

विनिधान

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
	दीर्घ कालिक विनिधान		
1.	सरकारी प्रतिभूतियां और सरकारी गारंटी बांड जिसमें ट्रेजरी बिल भी हैं		
2.	अन्य अनुमोदित प्रत्यभूतियां		
3.	अन्य विनिधान		
	(क) शेयर (क क) ईक्विटी (ख ख) अधिमानी (ख) पारस्परिक निधियां (ग) व्युत्पन्न विनिधान (घ) डिबेन्चर/बंधपत्र (ड) अन्य प्रतिभूतियां (विनिर्दिष्ट करें) (च) समनुषंगी (छ) विनिधान संपत्तियां-अचल संपत्ति		

	लघु अवधि विनिधान		
1.	सरकारी प्रतिभूतियां और सरकारी प्रत्याभूत बंधपत्र जिसमें ट्रेजरी बिल भी हैं		
2.	अन्य अनुमोदित प्रत्यभूतियां		
3.	अन्य विनिधान		
	(क) शेयर (क क) ईक्विटी (ख ख) अधिमानी (ख) पारस्परिक निधियां (ग) व्युत्पन्न विनिधान (घ) डिबेन्चर/बंधपत्र (ड) अन्य प्रतिभूतियां (विनिर्दिष्ट करें) (च) समनुषंगी (छ) विनिधान संपत्तियां-अचल संपत्ति		
	योग		
	विनिधान		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	योग		

टिप्पण :

- (क) अनुषंगी/नियंत्री कंपनियाँ, संयुक्त उद्यमों और सहयोजितों में विनिधान को लागत पर पृथक् रूप में प्रकट किया जाएगा।
- (i) नियंत्री कंपनियों और अनुषंगी कंपनियों का समान अर्थ लगाया जाएगा। महत्वपूर्ण प्रभाव विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जाएगा, उदाहरणार्थ कंपनी अधिनियम, 1956 में परिभाषित बोर्ड के निदेशक से संबंधित अध्यावेदन द्वारा, पालिसी की प्रक्रिया में भाग लेकर, सामग्री अंतर-कंपनी संव्यवहार, प्रबंधकीय अंतरपरिवर्तन।
 - (ii) संयुक्त उद्यम एक संविदागत ठहराव है जिसके द्वारा दो या उससे अधिक पक्षकार का ऐसा आर्थिक कार्यकलाप आरंभ करते हैं जो संयुक्त नियंत्रण के अध्यधीन नहीं।
 - (iii) संयुक्त नियंत्रण-किसी आर्थिक कार्यकलाप की वित्तीय और अपरेटिंग नीतियों को उससे प्राप्त फायदों के लिए शासित करने की शक्ति को विवाद प्राप्त करने के लिए संविदागत रूप से तय किया गया हो।
 - (iv) सहयुक्त-एक ऐसा उपक्रम है जिसमें कंपनी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और जो न तो कंपनी की अनुषंगी है और न ही संयुक्त उद्यम है।
 - (v) महत्वपूर्ण प्रभाव-(इस अनुभूचों के प्रयोजन के लिए) से अभिग्रेत हैं कंपनी की वित्तीय और अपरेटिंग नीति में भाग लेना किन्तु उन पार्लिसियों पर आवश्यक नियंत्रण नहीं होता है जो कार्मिकों या सूचना प्रौद्योगिकी पर निर्भर हैं। महत्वपूर्ण प्रभाव से शेयर स्वामित्व कानून या करार में अधिनियम हो सकता है। जहां तक शेयर स्वामित्व का संबंध है, यदि विनिधानकर्ता अनुषंगियों के माध्यम से विनिधाता की मतदान करने की शक्ति का 20 प्रतिशत या उससे अधिक प्रत्यक्षतः धारण करता है, तो यह उपधारण की जाती है कि विनिधानकर्ता का महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है जब तक यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं कर सकता है कि यह मामला नहीं है। इसके विपरीत, यदि विनिधानकर्ता अनुषंगियों के माध्यम से विनिधाता की मतदान करने की शक्ति के 20 प्रतिशत से कम प्रत्यक्षतः धारण करता है तो उपधारण की जाती है कि विनिधानकर्ता का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है जब तक कि ऐसा प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं किया जाता है। किसी अन्य विनिधानकर्ता द्वारा सारकान् और प्राप्तनय स्वामित्व, महत्वपूर्ण प्रभाव होने से विनिधानकर्ता को आवश्यक रूप से नहीं रोकता है।
- (छ) कंपनी के विनिधानों की कुल रकम मूल्यवद्द ईक्विटी प्रतिभूतियों को छोड़कर, और व्युत्पन्न विनिधानों और उनका बाजार मूल्य भी प्रकट किया जाएगा।
- (ग) विभीषिका आरक्षित में किए गए विनिधान पृथक् रूप से दर्शित किए जाएंगे।
- (घ) क्रृष्ण प्रतिभूतियों को “परिपक्वता के लिए धारित” प्रतिभूतियों के रूप में समझा जाएगा और क्रमिक अपाकरण के अध्यधीन पिछली लागत पर मापी जाएंगी।
- (ङ) विनिधान संपत्ति से ऐसी संपत्ति अभिग्रेत है (भूमि या भवन या भवन का भाग या दोनों) जो सेवाओं के उपयोग या प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए किराया आय या पूँजी मूल्यांकन के लिए या दोनों के लिए अर्जित करने के लिए धारित की जाती है।

अनुसूची-9

ऋण

	विशिष्टियां	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		('000 रु.)	('000 रु.)
1.	प्रतिभूतिवार वर्गीकरण		
	प्रतिभूत		
	(क) संपत्ति को बंधक बनाने पर		
	(कक) भारत में		
	(खख) भारत के बाहर		
	(ख) शेयरों, बंधपत्रों, सरकारी प्रतिभूतियों पर		
	(ग) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	अप्रतिभूत		
	योग		
2.	उधार लेने वाले के अनुसार वर्गीकरण		
	(क) केन्द्रीय और राज्य सरकारें		
	(ख) बैंक और वित्तीय संस्थाएं		
	(ग) अनुषंगी		
	(घ) औद्योगिक उपकरणों		
	(ड) अन्य (विनिर्दिष्ट किए जाएं)		
	योग		
3.	कार्य संपादन-वार वर्गीकरण		
	(क) मानक के रूप में वर्गीकृत ऋण		
	(कक) भारत में		
	(खख) भारत से बाहर		
	(ख) अपालन ऋण प्रावधान घटाइए		
	(कक) भारत में		
	(खख) भारत से बाहर		
	योग		
4.	परिपक्वता-वार वर्गीकरण		
	(क) लघु अवधि		
	(ख) दीर्घ अवधि		
	योग		

टिप्पण :

- (क) लघु अवधि ऋण उनमें सम्भिलित किया जाएगा जो तुलनपत्र तारीख के 12 मास के भीतर पुनः संदेय होते हैं। दीर्घ अवधि ऋण ऐसे ऋण होंगे जो लघु अवधि ऋण से भिन्न हों।
- (ख) अपालन ऋण के मद्दे प्रावधान पृथक् रूप से दर्शित किए जाएंगे।
- (ग) सभी दीर्घकालिक प्रतिभूत ऋण की दशा में, प्रतिभूत की प्रकृति प्रलेक मामले में विनिर्दिष्ट की जाएगी। इस अनुसूची के प्रयोजन के लिए प्रतिभूत ऋण से कंपनी की आस्ति के मद्दे पूर्णतः या भागतः प्रतिभूत ऋण अभिप्रेत है।
- (घ) शंकास्पद समझे गए ऋण और ऐसे ऋणों के मद्दे किए गए प्रावधान की रकम प्रकट की जाएगी।

अनुसूची-10

स्थिर आस्तियां

विशिष्टियां	लागत/सकल ब्लाक				अवधेयण			शुद्ध ब्लाक		
	आरम्भिक	अभि-वृद्धियां	कटौतियां	अंतिम	पिछले वर्ष तक	वर्ष के लिए	विक्रय/समायोजन पर	अब तक	वर्ष के अंत पर	पिछले वर्ष
अच्छी साख										
अमृतं (विनिर्दिष्ट करें)										
पूर्ण स्वामित्व भूमि										
पट्टव्यधृति										
भवन										
फर्निचर और फिटिंगें										
सूचना										
प्रौद्योगिकी										
उपस्कर										
वाहन										
कार्यालय उपस्कर										
अन्य (प्रकृति विनिर्दिष्ट करें)										
योग										
पिछला वर्ष										

टिप्पण : उपर्युक्त भूमि, भवन और संपत्ति में शामिल की गई आस्तियों में अनुसूची 8 के टिप्पण (ड) में परिभासित विनिधान संपत्तियों शामिल नहीं हैं।

अनुसूची-11

नकदी और बैंक अतिशेष

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
1.	नकदी (जिसमें चैक, ड्राफ्ट और स्टाम्प भी हैं)		
2.	बैंक अतिशेष		
	(क) निक्षेप लेखा		
	(कक) लघु कालिक (12 मास के भीतर देय)		
	(खख) अन्य		
	(ख) चालू खाता		
	(ग) अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
3.	मांग और अल्प सूचना पर देय राशि		
	(ग) बैंकों में		
	(घ) अन्य संस्थाओं से		
4.	अन्य विनिर्दिष्ट करें		
	योग		
	गैर अनुसूचित बैंक, जिसमें उपरोक्त 2 और 3 भी हैं के पास अतिशेष		
	नकदी और बैंक अतिशेष		
1.	भारत में		
2.	भारत के बाहर		
	योग		

टिप्पण : बैंक अतिशेष में अभिवहन प्रेषण सम्मिलित किए जाएंगे यदि ऐसा है तो प्रकृति और रकम पृथक् रूप से कथित की जानी चाहिए।

अनुसूची-12

अग्रिम और अन्य आस्तियां

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
	अग्रिम		
1.	अध्यपित कंपनियों में जमा आरक्षति		
2.	अध्यपित कंपनियों को अग्रिम		
3.	विनिधान के लिए आवेदन धन		
4.	पूर्व संदाय		
5.	अधिकारियों/निदेशकों को अग्रिम		
6.	संदत्त अग्रिम कर और स्रोत पर कर की कटौती		
7.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग (क)		
	अन्य आस्तियां		
1.	विनिधानों पर प्रोटोभूत आय		
2.	बकाया प्रीमियम		
3.	अधिकताओं का अतिशेष		
4.	विदेशी अधिकरणों का अतिशेष		
5.	अन्य बीमा निकायों से देय		
6.	अनुषंगी धारक से देय		
7.	पुनर्बीमा दावा/वसूली योग्य अतिशेष		
8.	भारतीय रिजर्व बैंक में निक्षेप (बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 7 के अनुसरण में)		
9.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग (ख)		
	योग (क + ख)		

टिप्पणियां :

- (क) उपरोक्त शीर्ष के अधीन की मद्दे शंकास्पद रकम के शुद्ध प्रावधान को दर्शात नहीं करेंगी। प्रत्येक शीर्ष के मद्दे प्रावधान की रकम पृथक् रूप से दर्शित की जानी चाहिए।
- (ख) “अधिकारी” पद कंपनी अधिनियम, 1956 के अधीन दिए गए शब्द की परिभाषा के अनुरूप होना चाहिए।

अनुसूची- 13

चालू दायित्व

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्व वर्ष ('000 रु.)
1.	अनुपार्जित प्रीमियम के लिए आरक्षति		
2.	अधिकताओं का अतिशेष		
3.	अन्य बीमा कंपनियों को देय अतिशेष		
4.	संधि कंपनियों से अग्रिम		
5.	अध्यपित पुनर्बीमा पर धारित निक्षेप		
6.	अग्रिम में प्राप्त प्रीमियम		
7.	विविध लेनदार		
8.	अनुपांगी/नियंत्री कंपनी को देय		
9.	बकाया दावे		
10.	अधिकारियों/निदेशकों को देय		
11.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

अनुसूची-14

प्रबंधन

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्ण वर्ष ('000 रु.)
1.	अनवासित जोखिम के लिए आरक्षित		
2.	कराधान के लिए (अग्रिम मंदस तर और स्रोत पर कटौती को घटाइए)		
3.	प्रस्तावित लाभांशों के लिए		
4.	लाभांश वितरण कर के लिए		
5.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

अनुसूची-15

प्रकीर्ण व्यय

(उस विस्तार तक जिस तक अपलिखित या समावेशित नहीं किए गए)

	विशिष्टियां	चालू वर्ष ('000 रु.)	पूर्ण वर्ष ('000 रु.)
1.	शेयरों और डिबेन्चरों को जारी करने में अनुज्ञात छूट		
2.	अन्य (विनिर्दिष्ट करें)		
	योग		

टिप्पण :

- (क) कोई भी मद “प्रकीर्ण व्यय” शीर्ष के अंतर्गत सम्मिलित नहीं की जाएगी और तब तक अग्रनीत नहीं की जाएगी जब तक—
1. व्यय से कुछ फायदे भविष्य में प्राप्त किए जाने की युक्तियुक्त रूप से प्रत्याशा की जा सकती है, और
 2. ऐसे फायदे की रकम युक्तियुक्त रूप से अवधारण येगा है।
- (ख) “प्रकीर्ण व्यय” शीर्ष के अंतर्गत सम्मिलित किसी मद की आबत अग्रतीन की जाने वाली रकम, व्यय से संबंधित प्रत्याशित भाक्षी राजस्व/अन्य फायदों से अधिक नहीं होगी।

अनुसूची ग

(विनियम 3 देखिए)

संपरीक्षक की रिपोर्ट

प्रत्येक बीमाकर्ता की वित्तीय विवरणियों संबंधी संपरीक्षकों की रिपोर्ट इसमें विनिर्दिष्ट विषयों से मंबंधित होगी :

1. (क) उन्होंने ऐसी सभी जानकारी और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं जो उनके ज्ञान और विश्वास के अनुसार उनकी लेखापरीक्षा के प्रयोजन के लिए आवश्यक थे तथा क्या उन्होंने उन्हें समाधान प्रद पाया है,

(ख) क्या लेखा की उचित बहियों बीमाकर्ता द्वारा रखी गई हैं जहाँ तक ऐसी बहियों की जांच करने से प्रतीत होता है;

(ग) क्या शाखाओं और अन्य कार्यालयों से उचित विवरणियां, संपरीक्षित या असंपरीक्षित प्राप्त कर ली हैं और क्या वे लेखापरीक्षा के प्रयोजन के लिए पर्याप्त थे;

(घ) रिपोर्ट से संबंधित अतिशेष पत्र, राजस्व लेखा और लाभ-हानि लेखा तथा प्राप्तियां तथा संदाय लेखा की लेखाबहियां और विवरणियों के अनुरूप हैं;

(ङ) क्या दायित्वों का बीमांकिक मूल्यांकन नियुक्त बीमांकक द्वारा सम्यक् रूप से प्रमाणित किया जाता है जिसमें वह आशय भी सम्मिलित है कि ऐसी मूल्यांकन की धारणा प्राधिकरण और/या प्राधिकरण की सहमति से भारतीय बीमांकिक सोसाइटी द्वारा जारी मार्गदर्शक सिद्धांतों तथा सन्नियमों, यदि कोई हों, के अनुसार है।

2. संपरीक्षक निम्नलिखित पर अपनी राय अभिव्यक्त करेगा:-

(क) (i) क्या तुलनपत्र में वित्तीय वर्ष/अवधि की समाप्ति पर बीमाकर्ता के क्रियाकलापों का सही और उचित चित्र प्रस्तुत है;

(ii) क्या राजस्व लेखा वित्तीय वर्ष/अवधि के लिए अधिशेष, या कमी की दृष्टि से, सही और उचित है;

(iii) क्या लाभ हानि लेखा वित्तीय वर्ष/अवधि के लिए लाभ या हानि की दृष्टि से सही और उचित है;

(iv) क्या प्राप्तियां और भुगतान लेखा वित्तीय वर्ष/अवधि के लिए प्राप्तियों और संदायों की दृष्टि से, सही और उचित है;

(ख) उपरोक्त (क) पर कथित वित्तीय विवरण वित्तीय बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4), बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) और कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की अपेक्षाओं के अनुसार लागू विस्तार तक और इस प्रकार अपेक्षित रीति में तैयार किया जाता है।

(ग) विनिधानों का अधिनियम और इन विनियमों के उपबंधों के अनुसार मूल्यांकन किया गया है।

(घ) बीमाकर्ता द्वारा चयनित लेखा नीतियां समुचित हैं और इन विनियमों या किसी आदेश या इस निमित्त प्राधिकरण द्वारा जारी निदेशों में यथा विहित लागू लेखा मानकों और लेखा सिद्धांतों के अनुपालन में हैं।

3. संपरीक्षक यह और प्रमाणित करेगा कि :

(क) उन्होंने प्रबंध-तंत्र रिपोर्ट का पुनर्विलोकन कर लिया है और इसमें वित्तीय रिपोर्ट से असंगत कोई स्पष्ट या सारवान् भूल नहीं है।

(ख) बीमाकर्ता ने प्राधिकरण द्वारा अनुबद्ध रजिस्ट्रीकरण के नियंत्रणों और शर्तों का पालन कर लिया है।

4. संपरीक्षकों द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र (यह ऐसे किसी अन्य प्रमाणपत्र या स्पोर्ट के अतिरिक्त होगा जो तुलनपत्र की बाबत दिए जाने के लिए विधि द्वारा अपेक्षित है) में यह प्रमाणित किया जाएगा कि :-

(क) उन्होंने बीमाकर्ता के ऋणों, प्रत्याशयों और जीवन हितों (जीवन बीमाकर्ताओं की दशा में) और विनिधानों से संबंधित नकदी अतिशेषों और प्रतिभूतियों को सत्यापित कर दिया है;

(ख) उन्होंने उस विस्तार तक बीमाकर्ता द्वारा न्यासी के रूप में आरंभ किए गए किसी न्यास से संबंधित विनिधानों और संब्यवहारों को सत्यापित कर दिया है; और

(ग) पालिसीधारियों की निधियों की आस्तियों का कोई भी भाग पालिसीधारियों की निधियों के उपयोजन और विनिधान से संबंधित बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) के उपबंधों के उल्लंघन में, प्रत्यक्षतः और अप्रत्यक्षतः लागू नहीं किया गया है।

एन. रंगचारी, अध्यक्ष

[विज्ञापन/3/4असा./161/2000]

INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th August, 2000

The Insurance Regulatory and Development Authority (Preparation of Financial Statements and Auditor's Report of Insurance Companies) Regulations, 2000.

F. No. IRDA/Reg/8/2000.—In exercise of the powers conferred by section 114A of the Insurance Act, 1938, (4 of 1938), the Authority, in consultation with the Insurance Advisory Committee, hereby makes the following regulations, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Insurance Regulatory and Development Authority (Preparation of Financial Statements and Auditor's Report of Insurance Companies) Regulations, 2000.

(2) They shall come into force from the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—(1) In these regulations, unless the context otherwise requires ---

- (a) "Act" means the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);
- (b) "Authority" means the Insurance Regulatory and Development Authority established under sub-section (1) of section 3 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999);
- (c) All words and expressions used herein and not defined but defined in the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), or in the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), or in the Companies Act, 1956 (1 of 1956), shall have the meanings respectively assigned to them in those Acts.

3. Preparation of financial statements, management report and auditor's report.—(1) An insurer carrying on life insurance business, after the commencement of these Regulations, shall comply with the requirements of Schedule A.

(2) An insurer carrying on general insurance business, after the commencement of these Regulations, shall comply with the requirements of Schedule B:

Provided that this sub-regulation shall apply, *mutatis mutandis*, to reinsurers, until separate regulations are made.

(3) The report of the auditors on the financial statements of every insurer and reinsurer shall be in conformity with the requirements of Schedule C, or as near as thereto as the circumstances permit.

(4) The Authority may, from time to time, issue separate guidelines in the matter of appointment, continuance or removal of auditors of an insurer or reinsurer, as the case may be, and such guidelines may include prescriptions regarding qualifications and experience of auditors, their rotation, period of appointment, etc.

SCHEDULE A

(See Regulation 3)

PART I**Accounting principles for preparation of financial statements**

1. Applicability of Accounting Standards--Every Balance Sheet, Revenue Account [Policyholders' Account], Receipts and Payments Account [Cash Flow statement] and Profit and Loss Account [Shareholders' Account] of an insurer shall be in conformity with the Accounting Standards (AS) issued by the ICAI, to the extent applicable to insurers carrying on life insurance business, except that:

- (i) Accounting Standard 3 (AS 3) – Cash Flow Statements – Cash Flow Statement shall be prepared only under the Direct Method.
- (ii) Accounting Standard 17 (AS 17) - Segment Reporting – shall apply irrespective of whether the securities of the insurer are traded publicly or not.

2. Premium--Premium shall be recognised as income when due. For linked business the due date for payment may be taken as the date when the associated units are created.

3. Premium Deficiency--Premium deficiency shall be recognised if the sum of expected claim costs, related expenses and maintenance costs exceeds related unearned premiums.

4. Acquisition Costs--Acquisition costs, if any, shall be expensed in the period in which they are incurred.

Acquisition costs are those costs that vary with and are primarily related to the acquisition of new and renewal insurance contracts. The most essential test is the obligatory relationship between costs and the execution of insurance contracts (i.e., commencement of risk).

5. Claims Cost--The ultimate cost of claims shall comprise the policy benefit amount and claims settlement costs, wherever applicable.

6. Actuarial Valuation-- Liability for Life Policies in force--The estimation of liability against life policies in force shall be determined by the appointed actuary of the insurer pursuant to his annual investigation of the life insurance business. Actuarial assumptions are to be disclosed by way of notes to the account.

The liability shall be so calculated that together with future premium payments and investment income, the insurer can meet all future claims (including bonus entitlements to policyholders) and expenses.

7. Procedure to determine the value of investments--An insurer shall determine the values of investments in the following manner:-

a) **Real Estate – Investment Property**-- The value of investment property shall be determined at historical cost, subject to revaluation at least once in every three years. The change in the carrying amount of the investment property shall be taken to Revaluation Reserve.

The insurer shall assess at each balance sheet date whether any impairment of the investment property has occurred.

Gains/ losses arising due to changes in the carrying amount of real estate shall be taken to equity under 'Revaluation Reserve'. The 'Profit on sale of investments' or 'Loss on sale of investments', as the case may be, shall include accumulated changes in the carrying amount previously recognised in equity under the heading 'Revaluation Reserve' in respect of a particular property and being recycled to the relevant Revenue Account or Profit and Loss Account on sale of that property.

The bases for revaluation shall be disclosed in the notes to accounts. The Authority may issue directions specifying the amount to be released from the revaluation reserve for declaring bonus to the policyholders. For the removal of doubt, it is clarified that except for the amount that is released to policyholders as per the Authority's direction, no other amount shall be distributed to shareholders out of Revaluation Reserve Account.

An impairment loss shall be recognised as an expense in the Revenue/Profit and Loss Account immediately, unless the asset is carried at revalued amount. Any impairment loss of a revalued asset shall be treated as a revaluation decrease of that asset and if the impairment loss exceeds the corresponding revaluation reserve, such excess shall be recognised as an expense in the Revenue/Profit and Loss Account.

b) Debt Securities—Debt securities, including government securities and redeemable preference shares, shall be considered as “held to maturity” securities and shall be measured at historical cost subject to amortisation.

c) Equity Securities and Derivative Instruments that are traded in active markets--Listed equity securities and derivative instruments that are traded in active markets shall be measured at fair value on the balance sheet date. For the purpose of calculation of fair value, the lowest of the last quoted closing price at the stock exchanges where the securities are listed shall be taken.

The insurer shall assess on each balance sheet date whether any impairment of listed equity security(ies)/derivative(s) instruments has occurred.

An active market shall mean a market, where the securities traded are homogenous, availability of willing buyers and willing sellers is normal and the prices are publicly available.

Unrealised gains/ losses arising due to changes in the fair value of listed equity shares and derivative instruments shall be taken to equity under the head ‘Fair Value Change Account’. The ‘Profit on sale of investments’ or ‘Loss on sale of investments’, as the case may be, shall include accumulated changes in the fair value previously recognised in equity under the heading ‘Fair Value Change Account’ in respect of a particular security and being recycled to the relevant Revenue Account or Profit and Loss Account on actual sale of that listed security.

The Authority may issue directions specifying the amount to be released from the Fair Value Change Account for declaring bonus to the policyholders. For the removal of doubt, it is clarified that except for the amount that is released to policyholders as per the Authority’s prescription, no other amount shall be distributed to shareholders out of Fair Value Change Account. Also, any debit balance in Fair Value Change Account shall be reduced from profit/free reserves while declaring dividends.

The insurer shall assess, on each balance sheet date, whether any impairment has occurred. An impairment loss shall be recognised as an expense in Revenue/Profit and Loss Account to the extent of the difference between the remeasured fair value of the security/investment and its acquisition cost as reduced by any previous impairment loss recognised as expense in Revenue/Profit and Loss Account. Any reversal of impairment loss, earlier recognised in Revenue/Profit and Loss Account shall be recognised in Revenue/Profit and Loss Account.

d) Unlisted and other than actively traded Equity Securities and Derivative Instruments--Unlisted equity securities and derivative instruments and listed equity securities and derivative instruments that are not regularly traded in active markets shall be measured at historical cost. Provision shall be made for diminution in value of such investments. The provision so made shall be reversed in subsequent periods if estimates based on external evidence show an increase in the value of the investment over its carrying amount. The increased carrying amount of the investment due to the reversal of the provision shall not exceed the historical cost.

For the purposes of this regulation, a security shall be considered as being not actively traded, if its trading volume does not exceed ten thousand units in any trading session during the last twelve months.

8. Loans--Loans shall be measured at historical cost subject to impairment provisions.

The insurer shall assess the quality of its loan assets and shall provide for impairment. The impairment provision shall not be less than the aggregate amount of loans which are subject to defaults of the nature mentioned below:-

- (i) interest remaining unpaid for over a period of six months; and
- (ii) instalment(s) of loan falling due and remaining unpaid during the last six months.

9. Linked Business--The accounting principles used for valuation of investments are to be consistent with principles enumerated above. A separate set of financial statements, for each segregated fund of the linked businesses, shall be annexed.

Segregated funds represent funds maintained in accounts to meet specific investment objectives of policyholders who bear the investment risk. Investment income/ gains and losses generally accrue directly to the policyholders. The assets of each account are segregated and are not subject to claims that arise out of any other business of the insurer.

10. Funds for Future Appropriation--The funds for future appropriation shall be presented separately.

The funds for future appropriation represent all funds, the allocation of which, either to the policyholders or to the shareholders, has not been determined by the end of the financial year.

PART II

Disclosures forming part of Financial Statements

A. The following shall be disclosed by way of notes to the Balance Sheet:

1. Contingent Liabilities:
 - (a) Partly-paid up investments
 - (b) Underwriting commitments outstanding
 - (c) Claims, other than those under policies, not acknowledged as debts
 - (d) Guarantees given by or on behalf of the company
 - (e) Statutory demands/liabilities in dispute, not provided for
 - (f) Reinsurance obligations
 - (g) Others (to be specified).
2. Actuarial assumptions for valuation of liabilities for life policies in force.
3. Encumbrances to assets of the company in and outside India.
4. Commitments made and outstanding for Loans, Investments and Fixed Assets.
5. Basis of amortisation of debt securities.
6. Claims settled and remaining outstanding for a period of more than six months on the balance sheet date.
7. Value of contracts in relation to investments, for:
 - (a) Purchases where deliveries are pending;
 - (b) Sales where payments are overdue.
8. Operating expenses relating to insurance business: basis of allocation of expenditure to various segments of business.
9. Computation of managerial remuneration.
10. Historical costs of those investments valued on fair value basis.
11. Basis of revaluation of investment property.

B. The following accounting policies shall form an integral part of the financial statements:

1. All significant accounting policies in terms of the accounting standards issued by the ICAI, and significant principles and policies given in Part I of Accounting Principles. Any other accounting policies, followed by the insurer, shall be stated in the manner required under Accounting Standard AS 1 issued by ICAI.
2. Any departure from the accounting policies shall be separately disclosed with reasons for such departure.

C. The following information shall also be disclosed:

1. Investments made in accordance with any statutory requirement should be disclosed separately together with its amount, nature, security and any special rights in and outside India;
2. Segregation into performing/ non performing investments for purpose of income recognition as per the directions, if any, issued by the Authority;
3. Assets to the extent required to be deposited under local laws or otherwise encumbered in or outside India;
4. Percentage of business sector-wise;
5. A summary of financial statements for the last five years, in the manner as may be prescribed by the Authority;
6. Bases of allocation of investments and income thereon between Policyholders' Account and Shareholders' Account;
7. Accounting Ratios as may be prescribed by the Authority.

PART III

General instructions for preparation of Financial Statements

1. The corresponding amounts for the immediately preceding financial year for all items shown in the Balance Sheet, Revenue Account, Profit and Loss Account and Receipts and Payments Account shall be given.
2. The figures in the financial statements may be rounded off to the nearest thousands.
3. Interest, dividends and rentals receivable in connection with an investment should be stated at gross amount, the amount of income tax deducted at source should be included under 'advance taxes paid' and taxes deducted at source.
4. (I) For the purposes of financial statements, unless the context otherwise requires -
 - (a) the expression 'provision' shall, subject to (II) below mean any amount written off or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets, or retained by way of providing for any known liability or loss of which the amount cannot be determined with substantial accuracy;
 - (b) the expression 'reserve' shall not, subject to as aforesaid, include any amount written off or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets or retained by way of providing for any known liability or loss;
 - (c) the expression 'capital reserve' shall not include any amount regarded as free for distribution through the profit and loss account; and the expression 'revenue reserve' shall mean any reserve other than a capital reserve;
 - (d) The expression "liability" shall include all liabilities in respect of expenditure contracted for and all disputed or contingent liabilities.
- (II) Where:
 - (a) any amount written off or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets, or
 - (b) any amount retained by way of providing for any known liability or loss, is in excess of the amount which in the opinion of the directors is reasonably necessary for the purpose, the excess shall be treated as a reserve and not provision.
5. The company shall make provisions for damages under lawsuits where the management is of the opinion that the award may go against the insurer.
6. Risks assumed in excess of the statutory provisions, if any, shall be separately disclosed indicating the amount of premiums involved and the amount of risks covered.
7. Any debit balance of the Profit and Loss Account shall be shown as deduction from uncommitted reserves and the balance, if any, shall be shown separately.

PART IV**Contents of Management Report**

There shall be attached to the financial statements, a management report containing, *inter alia*, the following duly authenticated by the management:

1. Confirmation regarding the continued validity of the registration granted by the Authority;
2. Certification that all the dues payable to the statutory authorities have been duly paid;
3. Confirmation to the effect that the shareholding pattern and any transfer of shares during the year are in accordance with the statutory or regulatory requirements;
4. Declaration that the management has not directly or indirectly invested outside India the funds of the holders of policies issued in India;
5. Confirmation that the required solvency margins have been maintained;
6. Certification to the effect that the values of all the assets have been reviewed on the date of the Balance Sheet and that in his (Insurer's) belief the assets set forth in the Balance-sheets are shown in the aggregate at amounts not exceeding their realisable or market value under the several headings – "Loans", "Investments", "Agents balances", "Outstanding Premiums", "Interest, Dividends and Rents outstanding", "Interest, Dividends and Rents accruing but not due", "Amounts due from other persons or Bodies carrying on insurance business", "Sundry Debtors", "Bills Receivable", "Cash" and the several items specified under "Other Accounts";
7. Certification to the effect that the that no part of the life insurance fund has been directly or indirectly applied in contravention of the provisions of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938) relating to the application and investment of the life insurance funds;
8. Disclosure with regard to the overall risk exposure and strategy adopted to mitigate the same;
9. Operations in other countries, if any, with a separate statement giving the management's estimate of country risk and exposure risk and the hedging strategy adopted;
10. Ageing of claims indicating the trends in average claim settlement time during the preceding five years;
11. Certification to the effect as to how the values, as shown in the balance sheet, of the investments and stocks and shares have been arrived at, and how the market value thereof has been ascertained for the purpose of comparison with the values so shown;
12. Review of asset quality and performance of investment in terms of portfolios, i.e., separately in terms of real estate, loans, investments, etc.
13. A responsibility statement indicating therein that:
 - (a) in the preparation of financial statements, the applicable accounting standards, principles and policies have been followed along with proper explanations relating to material departures, if any;
 - (b) the management has adopted accounting policies and applied them consistently and made judgements and estimates that are reasonable and prudent so as to give a true and fair view of the state of affairs of the company at the end of the financial year and of the operating profit or loss and of the profit or loss of the company for the year;

- (c) the management has taken proper and sufficient care for the maintenance of adequate accounting records in accordance with the applicable provisions of the Insurance Act 1938 (4 of 1938) / Companies Act, 1956 (1 of 1956), for safeguarding the assets of the company and for preventing and detecting fraud and other irregularities;
- (d) the management has prepared the financial statements on a going concern basis;
- (e) the management has ensured that an internal audit system commensurate with the size and nature of the business exists and is operating effectively.

PART V

Preparation of Financial Statements

- (1) An insurer shall prepare the Revenue Account [Policyholders' Account], Profit and Loss Account [Shareholders' Account] and the Balance Sheet in Form A-RA, Form A-PL and Form A-BS, as prescribed in this Part, or as near thereto as the circumstances permit.

Provided that an insurer shall prepare Revenue Account for the undermentioned businesses separately and to that extent the application of AS 17 shall stand modified:-

- a) Participating policies and Non-participating policies;
 - b) Linked, Non-Linked, and Health Insurance;
 - c) Business within India and Business outside India.
- (2) An insurer shall prepare separate Receipts and Payments Account in accordance with the Direct Method prescribed in AS 3 – "Cash Flow Statement" issued by the ICAI.

FORM A-RA

Name of the Insurer:

Registration No. and Date of Registration with the IRDA

REVENUE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 20____.

Policyholders' Account (Technical Account)

	Particulars	Schedule	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
	Premiums earned – net			
	(a) Premium	1		
	(b) Reinsurance ceded			
	(c) Reinsurance accepted-			
	Income from Investments			
	(a) Interest, Dividends & Rent – Gross			
	(b) Profit on sale/redemption of investments			
	(c) (Loss on sale/ redemption of investments)			
	(d) Transfer/Gain on revaluation/change in fair value*			
	Other Income (to be specified)			
	TOTAL (A)			
	Commission	2		
	Operating Expenses related to Insurance Business	3		
	Other Expenses (to be specified)			
	Provisions (other than taxation)			
	(a) For diminution in the value of investments (Net)			
	(b) Others (to be specified)			
	TOTAL (B)			
	Benefits Paid (Net)	4		
	Interim Bonuses Paid			
	Change in valuation of liability against life policies in force			
	(a) Gross**			
	(b) (Amount ceded in Reinsurance)			
	(c) Amount accepted in Reinsurance			
	TOTAL (C)			
	SURPLUS/ (DEFICIT) (D) = (A)-(B)-(C)			
	APPROPRIATIONS			
	Transfer to Shareholders' Account			
	Transfer to Other Reserves (to be specified)			
	Transfer to Funds for Future Appropriations			
	TOTAL (D)			

Notes:

* Represents the deemed realised gain as per norms specified by the Authority.

** represents Mathematical Reserves after allocation of bonus

The total surplus shall be disclosed separately with the following details:

- (a) Interim Bonuses Paid:
- (b) Allocation of Bonus to policyholders:
- (c) Surplus shown in the Revenue Account:
- (d) Total Surplus: ((a)+(b)+(c)):

FORM A-PL

Name of the Insurer:
Registration No. and Date of Registration with the IRDA

PROFIT & LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 20___.**Shareholders' Account (Non-technical Account)**

	Particulars	Schedule	Current Year	Previous Year
			(Rs.'000).	(Rs.'000).
	Balance brought forward from /transferred to the Policyholders Account (Technical Account)			
	Income From Investments			
	(a) Interest, Dividends & Rent – Gross (b) Profit on sale/redemption of investments (c) (Loss on sale/ redemption of investments)			
	Other Income (To be specified)			
	TOTAL (A)			
	Expense other than those directly related to the insurance business			
	Provisions (Other than taxation)			
	(a) For diminution in the value of investments (Net) (b) Others (to be specified)			
	TOTAL (B)			
	Profit/ (Loss) before tax			
	Provision for Taxation			
	Profit / (Loss) after tax			
	APPROPRIATIONS			
	(a) Brought forward Reserve/Surplus from the Balance Sheet (b) Interim dividends paid during the year (c) Proposed final dividend (d) Dividend distribution on tax (e) Transfer to reserves/ other accounts (to be specified)			
	Profit carried forward to the Balance Sheet			

Notes:

- (a) In case of premiums, less reinsurance in respect of any segment of insurance business of total premium earned, the same shall be disclosed separately.
- (b) Premium income received from business concluded in and outside India shall be separately disclosed.
- (c) Reinsurance premiums whether on business ceded or accepted are to be brought into account gross (i.e. before deducting commissions) under the head reinsurance premiums.
- (d) Claims incurred shall comprise claims paid, settlement costs wherever applicable and change in the outstanding provision for claims at the year-end.
- (e) Items of expenses and income in excess of one percent of the total premiums (less reinsurance) or Rs.5,00,000 whichever is higher, shall be shown as a separate line item.
- (f) Fees and expenses connected with claims shall be included in claims.
- (g) Under the sub-head "Others" shall be included items like foreign exchange gains or losses and other items.
- (h) Interest, dividends and rentals receivable in connection with an investment should be stated as gross amount, the amount of income tax deducted at source being included under 'advance taxes paid and taxes deducted at source'.
- (i) Income from rent shall include only the realised rent. It shall not include any notional rent.

FORM A-BS

Name of the Insurer:

Registration No. and Date of Registration with the IRDA

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 20____.

		Schedule	Current Year	Previous Year
			(Rs.'000).	(Rs.'000).
SOURCES OF FUNDS				
<i>SHAREHOLDERS' FUNDS:</i>				
SHARE CAPITAL		5		
RESERVES AND SURPLUS -		6		
CREDIT/[DEBIT] FAIR VALUE CHANGE ACCOUNT				
Sub-Total				
BORROWINGS		7		
<i>POLICYHOLDERS' FUNDS:</i>				
CREDIT/[DEBIT] FAIR VALUE CHANGE ACCOUNT				
POLICY LIABILITIES				
INSURANCE RESERVES				
PROVISION FOR LINKED LIABILITIES				
Sub-Total				
FUNDS FOR FUTURE APPROPRIATIONS				
TOTAL				
APPLICATION OF FUNDS				
INVESTMENTS				
Shareholders'		8		
Policyholders'		8A		
ASSETS HELD TO COVER LINKED LIABILITIES				
LOANS		9		
FIXED ASSETS		10		
CURRENT ASSETS				
Cash and Bank Balances		11		
Advances and Other Assets		12		
Sub-Total (A)				
CURRENT LIABILITIES		13		
PROVISIONS		14		
Sub-Total (B)				
NET CURRENT ASSETS (C) = (A - B)				
MISCELLANEOUS EXPENDITURE (to the extent not written off or adjusted)		15		
DEBIT BALANCE IN PROFIT & LOSS ACCOUNT (Shareholders' Account)				
TOTAL				

CONTINGENT LIABILITIES

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1.	Partly paid-up investments		
2.	Claims, other than against policies, not acknowledged as debts by the company		
3.	Underwriting commitments outstanding		
4.	Guarantees given by or on behalf of the Company		
5.	Statutory demands/ liabilities in dispute, not provided for		
6.	Reinsurance obligations		
7.	Others (to be specified)		
	TOTAL		

SCHEDULES FORMING PART OF FINANCIAL STATEMENTS**SCHEDULE – I
PREMIUM**

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1	First year premiums		
2	Renewal Premiums		
3	Single Premiums		
	TOTAL PREMIUM		

	Premium Income from business written :		
1	In India		
2	Outside India		
	Total Premium (Net)		

Notes.

Reinsurance premiums whether on business ceded or accepted are to be brought into account, before deducting commission, under the head of reinsurance premiums.

**SCHEDULE- 2
COMMISSION EXPENSES**

Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
Commission paid		
Direct – First year premiums		
- Renewal premiums		
- Single premiums		
Add: Commission on Re-insurance Accepted		
Less: Commission on Re-insurance Ceded		
Net Commission		

Note:

The profit commission, if any, are to be combined with the Re-insurance accepted or Re-insurance ceded figures.

SCHEDULE – 3**OPERATING EXPENSES RELATED TO INSURANCE BUSINESS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Employees' remuneration & welfare benefits		
2.	Travel, conveyance and vehicle running expenses		
3.	Rents, rates & taxes		
4.	Repairs		
5.	Printing & stationery		
6.	Communication expenses		
7.	Legal & professional charges		
8.	Medical fees		
9.	Auditors' fees, expenses etc		
	a) as auditor		
	b) as adviser or in any other capacity, in respect of		
	(i) Taxation matters		
	(ii) Insurance matters		
	(iii) Management services; and		
c)	in any other capacity		
10.	Advertisement and publicity		
11.	Interest & Bank Charges		
12.	Others (to be specified)		
13.	Depreciation		
	TOTAL		

Notes:

- a) Items of expenses in excess of one percent of the net premium or Rs.5,00,000 whichever is higher, shall be shown as a separate line item.
- b) Under the sub-head "Others", 'Operating Expenses (Insurance Business)' shall include items like foreign exchange gains or losses and other items.

SCHEDULE – 4**BENEFITS PAID [NET]**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Insurance Claims (a) Claims by Death, (b) Claims by Maturity, (c) Annuities/Pensions in payment, (d) Other benefits, specify		
2.	(Amount ceded in reinsurance) : (a) Claims by Death, (b) Claims by Maturity, (c) Annuities/Pensions in payment, (d) Other benefits, specify		
3.	Amount accepted in reinsurance : (a) Claims by Death, (b) Claims by Maturity, (c) Annuities/Pensions in payment, (d) Other benefits, specify		
	TOTAL		

	Benefits paid to claimants:		
1	In India		
2	Outside India		
	Total Benefits paid (Net)		

Notes: (a) Claims include claims settlement costs, wherever applicable.

(b) The legal and other fees and expenses shall also form part of the claims cost, wherever applicable..

SCHEDULE – 5**SHARE CAPITAL**

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1.	Authorised Capital Equity Shares of Rs..... each		
2.	Issued Capital Equity Shares of Rs.each		
3.	Subscribed Capital Equity Shares of Rs.....each		
4.	Called-up Capital Equity Shares of Rs.each		
5.	Less : Calls unpaid Add : Shares forfeited (Amount originally paid up)		
	Less: Par value of Equity Shares bought back		
	Less : Preliminary Expenses Expenses including commission or brokerage on Underwriting or subscription of shares		
	TOTAL		

Notes:

- (a) Particulars of the different classes of capital should be separately stated.
- (b) The amount capitalised on account of issue of bonus shares should be disclosed.
- (c) In case any part of the capital is held by a holding company, the same should be separately disclosed.

SCHEDULE – 5A**PATTERN OF SHAREHOLDING**

[As certified by the Management]

Shareholder	Current Year		Previous Year	
	Number of Shares	% of Holding	Number of Shares	% of Holding
Promoters				
• Indian				
• Foreign				
Others				
TOTAL,				

SCHEDULE – 6**RESERVES AND SURPLUS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Capital Reserve		
2.	Capital Redemption Reserve		
3.	Share Premium		
4.	Revaluation Reserve		
5.	General Reserves Less: Debit balance in Profit and Loss Account, if any Less: Amount utilized for Buy-back		
6.	Catastrophe Reserve		
7.	Other Reserves (to be specified)		
8.	Balance of profit in Profit and Loss Account		
	TOTAL		

Note:

Additions to and deductions from the reserves should be disclosed under each of the specified heads.

**SCHEDULE - 7
BORROWINGS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Debentures/ Bonds		
2.	Fixed Deposits		
3.	Banks		
4.	Financial Institutions		
5.	Other entities carrying on insurance business		
6.	Others (to be specified)		
	TOTAL		

Notes:

- (a) The extent to which the borrowings are secured shall be separately disclosed stating the nature of the security under each sub-head.
- (b) Amounts due within 12 months from the date of Balance Sheet should be shown separately.

**SCHEDULE- 8
INVESTMENTS-SHAREHOLDERS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
LONG TERM INVESTMENTS			
1.	Government securities and Government guaranteed bonds including Treasury Bills		
2.	Other Approved Securities		
3.	Other Investments		
	(a) Shares (aa) Equity (bb) Preference (b) Mutual Funds (c) Derivative Instruments (d) Debentures/ Bonds (e) Other Securities (to be specified) (f) Subsidiaries (g) Investment Properties-Real Estate		

	SHORT TERM INVESTMENTS		
1.	Government securities and Government guaranteed bonds including Treasury Bills		
2.	Other Approved Securities		
3.	Other Investments		
	(a) Shares (aa) Equity (bb) Preference (b) Mutual Funds (c) Derivative Instruments (d) Debentures/ Bonds (e) Other Securities (to be specified) (f) Subsidiaries (g) Investment Properties-Real Estate		
	TOTAL		
	INVESTMENTS		
1	In India		
2	Outside India		
	TOTAL		

Note: Refer notes under Schedule 8A

SCHEDULE- 8A
INVESTMENTS-POLICYHOLDERS

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
LONG TERM INVESTMENTS			
1.	Government securities and Government guaranteed bonds including Treasury Bills		
2.	Other Approved Securities		
3.	(a) Shares (aa) Equity (bb) Preference (b) Mutual Funds (c) Derivative Instruments (d) Debentures/ Bonds (e) Other Securities (to be specified) (f) Subsidiaries (g) Investment Properties-Real Estate		
4.	Investments in Infrastructure and Social Sector		
5.	Other than Approved Investments		
SHORT TERM INVESTMENTS			
1.	Government securities and Government guaranteed bonds including Treasury Bills		
2.	Other Approved Securities		
3.	(a) Shares (aa) Equity (bb) Preference (b) Mutual Funds (c) Derivative Instruments (d) Debentures/ Bonds (e) Other Securities (to be specified) (f) Subsidiaries (g) Investment Properties-Real Estate		
4.	Investments in Infrastructure and Social Sector		
5.	Other than Approved Investments		
	TOTAL		

	INVESTMENTS		
1	In India		
2	Outside India		
	TOTAL		

Notes (applicable to Schedules 8 and 8A):

- (a) Investments in subsidiary/holding companies, joint ventures and associates shall be separately disclosed, at cost.
- (i) Holding company and subsidiary shall be construed as defined in the Companies Act, 1956:
 - (ii) Joint Venture is a contractual arrangement whereby two or more parties undertake an economic activity, which is subject to joint control.
 - (iii) Joint control - is the contractually agreed sharing of power to govern the financial and operating policies of an economic activity to obtain benefits from it.
 - (iv) Associate - is an enterprise in which the company has significant influence and which is neither a subsidiary nor a joint venture of the company.
 - (v) Significant influence (for the purpose of this schedule) -means participation in the financial and operating policy decisions of a company, but not control of those policies. Significant influence may be exercised in several ways, for example, by representation on the board of directors, participation in the policy making process, material inter-company transactions, interchange of managerial personnel or dependence on technical information. Significant influence may be gained by share ownership, statute or agreement. As regards share ownership, if an investor holds, directly or indirectly through subsidiaries, 20 percent or more of the voting power of the investee, it is presumed that the investor does have significant influence, unless it can be clearly demonstrated that this is not the case. Conversely, if the investor holds, directly or indirectly through subsidiaries, less than 20 percent of the voting power of the investee, it is presumed that the investor does not have significant influence, unless such influence is clearly demonstrated. A substantial or majority ownership by another investor does not necessarily preclude an investor from having significant influence.

- (b) Aggregate amount of company's investments other than listed equity securities and derivative instruments and also the market value thereof shall be disclosed.
- (g) Investments made out of Catastrophe reserve should be shown separately
- (h) Debt securities will be considered as "held to maturity" securities and will be measured at historical costs subject to amortisation
- (i) Investment Property means a property [land or building or part of a building or both] held to earn rental income or for capital appreciation or for both, rather than for use in services or for administrative purposes.

SCHEDULE - 9
LOANS

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1. SECURITY-WISE CLASSIFICATION			
<i>Secured</i>			
(a) On mortgage of property			
(aa) In India			
(bb) Outside India			
(b) On Shares, Bonds, Govt. Securities, etc.			
(c) Others (to be specified)			
<i>Unsecured</i>			
(a) Loans against policies			
(b) Others (to be specified)			
TOTAL			
2. BORROWER-WISE CLASSIFICATION			
(a) Central and State Governments			
(b) Banks and Financial Institutions			
(c) Subsidiaries			
(d) Companies			
(e) Loans against policies			
(f) Others (to be specified)			
TOTAL			
3. PERFORMANCE-WISE CLASSIFICATION			
(a) Loans classified as standard			
(aa) In India			
(bb) Outside India			
(b) Non-standard loans less provisions			
(aa) In India			
(bb) Outside India			
TOTAL			
4. MATURITY-WISE CLASSIFICATION			
(a) Short Term			
(b) Long Term			
TOTAL			

Notes:

- (a) Short-term loans shall include those, which are repayable within 12 months from the date of balance sheet.
Long term loans shall be the loans other than short-term loans.
- (b) Provisions against non-performing loans shall be shown separately.
- (c) The nature of the security in case of all long term secured loans shall be specified in each case. Secured loans for the purposes of this schedule, means loans secured wholly or partly against an asset of the company.
- (d) Loans considered doubtful and the amount of provision created against such loans shall be disclosed.

SCHEDULE - 10**FIXED ASSETS**

(Rs.'000)

Particulars	Cost/ Gross Block				Depreciation				Net Block	
	Opening	Additions	Deductions	Closing	Upto Last Year	For The Year	On Sales/ Adjustments	To Date	As at year end	Previous Year
Goodwill										
Intangibles (specify)										
Land-Freehold										
Leasehold Property										
Buildings										
Furniture & Fittings										
Information Technology Equipment										
Vehicles										
Office Equipment										
Others (Specify nature)										
TOTAL										
PREVIOUS YEAR										

*Note:**Assets included in land, property and building above exclude Investment Properties as defined in note (e) to Schedule 8.***SCHEDULE- 11****CASH AND BANK BALANCES**

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1.	Cash (including cheques, drafts and stamps)		
2.	Bank Balances		
	(a) Deposit Accounts		
	(aa) Short-term (due within 12 months of the date of Balance Sheet)		
	(bb) Others		
	(b) Current Accounts		
	(c) Others (to be specified)		
3.	Money at Call and Short Notice		
	(a) With Banks		
	(b) With other Institutions		
4.	Others (to be specified)		
	TOTAL		
	Balances with non-scheduled banks included in 2 and 3 above		
	CASH & BANK BALANCES		
1	In India		
2	Outside India		
	TOTAL		

Note: Bank balance may include remittances in transit. If so, the nature and amount should be separately stated.

SCHEDULE – 12
ADVANCES AND OTHER ASSETS

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
ADVANCES			
1.	Reserve deposits with ceding companies		
2.	Advances to ceding companies		
3.	Application money for investments		
4.	Prepayments		
5.	Advances to Officers/ Directors		
6.	Advance tax paid and taxes deducted at source		
7.	Others (to be specified)		
TOTAL (A)			
OTHER ASSETS			
1.	Income accrued on investments		
2.	Outstanding Premiums		
3.	Agents' Balances		
4.	Foreign Agencies' Balances		
5.	Due from other entities carrying on insurance business		
6.	Due from subsidiaries/ holding company		
7.	Reinsurance claims/balances receivable		
8.	Deposit with Reserve Bank of India [Pursuant to section 7 of Insurance Act, 1938]		
9.	Others (to be specified)		
TOTAL (B)			
TOTAL (A+B)			

Notes:

- (a) The items under the above heads shall not be shown net of provisions for doubtful amounts. The amount of provision against each head should be shown separately.
- (b) The term 'officer' should conform to the definition of the word 'officer' under the Companies Act, 1956.

SCHEDULE – 13

CURRENT LIABILITIES

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Agents' Balances		
2.	Balances due to other insurance companies		
3.	Advances from Treaty Companies		
4.	Deposits held on re-insurance ceded		
5.	Premiums received in advance		
6.	Sundry creditors		
7.	Due to subsidiaries/ holding company		
8.	Claims Outstanding		
9.	Annuities Due		
10.	Due to Officers/ Directors		
11.	Others (to be specified)		
TOTAL			

SCHEDULE - 14**PROVISIONS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1.	For taxation (less payments and taxes deducted at source)		
2.	For proposed dividends		
3.	For dividend distribution tax		
4.	Bonus payable to the Policyholders		
5.	Others (to be specified)		
	TOTAL		

SCHEDULE - 15**MISCELLANEOUS EXPENDITURE**
(To the extent not written off or adjusted)

	Particulars	Current Year (Rs.'000).	Previous Year (Rs.'000).
1.	Discount Allowed in issue of shares/ debentures		
2.	Others (to be specified)		
	TOTAL		

Notes:

(a) No item shall be included under the head "Miscellaneous Expenditure" and carried forward unless:

1. some benefit from the expenditure can reasonably be expected to be received in future, and
2. the amount of such benefit is reasonably determinable.

(b) The amount to be carried forward in respect of any item included under the head "Miscellaneous Expenditure" shall not exceed the expected future revenue/other benefits related to the expenditure.

SCHEDULE B

(See Regulation 3)

PART I

Accounting principles for preparation of financial statements

1. Applicability of Accounting Standards--Every Balance Sheet, Receipts and Payments Account [Cash Flow statement] and Profit and Loss Account [Shareholders' Account] of the insurer shall be in conformity with the Accounting Standards (AS) issued by the ICAI, to the extent applicable to the insurers carrying on general insurance business, except that:

- (i) Accounting Standard 3 (AS 3) – Cash Flow Statements – Cash Flow Statement shall be prepared only under the Direct Method.
- (ii) Accounting Standard 13 (AS 13) – Accounting for Investments, shall not be applicable.
- (iii) Accounting Standard 17 (AS 17) - Segment Reporting – shall apply irrespective of whether the securities of the insurer are traded publicly or not.

2. Premium--Premium shall be recognised as income over the contract period or the period of risk, whichever is appropriate. Unearned premium as well as premium received in advance, both of which represent premium income not relating to the current accounting period, shall be disclosed separately in the financial statements.

A reserve for Unearned Premium, may be created as the amount representing that part of the premium written which is attributable and to be allocated to the succeeding accounting periods.

Premium Received in Advance, which represents premium received prior to the commencement of the risk, shall be shown separately under the head '*Current Liabilities*' in the financial statements.

Unearned premium shall be shown separately under the head '*Current Liabilities*' and appropriate disclosures regarding management's basis of assessment shall be made in the financial statements.

Premium received in advance shall not be included in the unearned premium and shall be shown separately.

Premium revenue recognition is based on the pattern of risk to which the insurer is exposed. An insurer, based on past experience can reliably estimate the pattern of risk for a particular type of insurance business. Most insurers bring premium revenue to account on the basis of the passage of time. This is generally appropriate where the risk of events occurring that give rise to claims is more or less uniform throughout the policy period subject to any regulatory prescription in this regard.

For some classes of insurance, it is usual for the premium to be adjusted as a result of events and information that becomes known during or after the policy period, e.g. marine cargo. Further, in some cases, risk pattern may not be evenly spread over the period of insurance because of the very nature of the risk covered e.g. some infrastructure projects involving varying degrees of risk factors. A deposit premium is paid in such cases at the beginning of the policy period and subsequently adjusted. The basis of determination of premium earned shall be adequately justified, preferably supported by external evidence such as by certification from an actuary and/or other technical experts. Adequate disclosure of such basis shall be made.

3. Premium Deficiency--Premium deficiency shall be recognised if the sum of expected claim costs, related expenses and maintenance costs exceeds related unearned premiums.

For contracts exceeding four years, once a premium deficiency has occurred, future changes to the liability shall be based on actuarial/technical evaluation.

4. Acquisition Costs--Acquisition costs, if any, shall be expensed in the period in which they are incurred.

Acquisition costs are those costs that vary with, and are primarily related to, the acquisition of new and renewal insurance contracts. The most essential test is the obligatory relationship between costs and the execution of insurance contracts (i.e. commencement of risk).

5. Claims--The components of the ultimate cost of claims to an insurer comprise the claims under policies and claims settlement costs. Claims under policies comprise the claims made for losses incurred, and those estimated or anticipated under the policies.

A liability for outstanding claims shall be brought to account in respect of both direct business and inward reinsurance business. The liability shall include: -

- (a) Future payments in relation to unpaid reported claims;
- (b) Claims Incurred But Not Reported (IBNR) including inadequate reserves (sometimes referred to as Claims Incurred But Not Enough Reported (IBNER)).

which will result in future cash/asset outgo for settling liabilities against those claims. Change in estimated liability represents the difference between the estimated liability for outstanding claims in respect of claims under policies whether due or intimated at the beginning and at the end of the financial period. The accounting estimate shall also include claims cost adjusted for estimated salvage value if there is sufficient degree of certainty of its realisation.

Actuarial Valuation of claim liability – In some cases

Estimate of claims made in respect of contracts exceeding four years shall be recognised on an actuarial basis, subject to regulations that may be prescribed by the Authority. In such cases, certificate from a recognised actuary as to the fairness of liability assessment must be obtained. Actuarial assumptions shall be suitably disclosed by way of notes to the account.

Necessary provision for unexpired risk shall be made subject to any minimum, statutorily required.

6. Procedure to determine the value of investments.---An insurer shall determine the values of investments in the following manner:-

a) Real Estate – Investment Property-- Investment Property shall be measured at historical cost less accumulated depreciation and impairment loss, residual value being considered zero and no revaluation being permissible.

The Insurer shall assess at each balance sheet date whether any impairment of the investment property has occurred.

An impairment loss shall be recognised as an expense in the Revenue/Profit and Loss Account immediately.

Fair value as at the balance sheet date and the basis of its determination shall be disclosed in the financial statements as additional information.

b) Debt Securities--Debt securities including government securities and redeemable preference shares shall be considered as "held to maturity" securities and shall be measured at historical cost subject to amortisation.

c) Equity Securities and Derivative Instruments that are traded in active markets--Listed equity securities and derivative instruments that are traded in active markets shall be measured at fair value as at the balance sheet date. For the purpose of calculation of fair value, the lowest of the last quoted closing price of the stock exchanges where the securities are listed shall be taken.

The insurer shall assess on each balance sheet date whether any impairment of listed equity security(ies)/ derivative(s) instruments has occurred.

An active market shall mean a market, where the securities traded are homogenous, availability of willing buyers and willing sellers is normal and the prices are publicly available.

Unrealised gains/losses arising due to changes in the fair value of listed equity shares and derivative instruments shall be taken to equity under the head 'Fair Value Change Account' and on realisation reported in Profit and Loss Account. The 'Profit on sale of investments' or 'Loss on sale of investments', as the case may be, shall include accumulated changes in the fair value previously recognised in equity under the heading Fair Value Change Account in respect of a particular security and being recycled to Profit and Loss Account on actual sale of that listed security.

For the removal of doubt, it is clarified that balance or any part thereof shall not be available for distribution as dividends. Also, any debit balance in the said Fair Value Change Account shall be reduced from the profits/free reserves while declaring dividends.

The insurer shall assess, at each balance sheet date, whether any impairment has occurred. An impairment loss shall be recognised as an expense in Revenue/Profit and Loss Account to the extent of the difference between the remeasured fair value of the security/ investment and its acquisition cost as reduced by any previous impairment loss recognised as expense in Revenue/Profit and Loss Account. Any reversal of impairment loss, earlier recognised in Revenue/Profit and Loss Account shall be recognised in Revenue/Profit and Loss Account.

d) Unlisted and other than actively traded Equity Securities and Derivative Instruments--Unlisted equity securities and derivative instruments and listed equity securities and derivative instruments that are not regularly traded in active market will be measured at historical costs. Provision shall be made for diminution in value of such investments. The provision so made shall be reversed in subsequent periods if estimates based on external evidence show an increase in the value of the investment over its carrying amount. The increased carrying amount of the investment due to the reversal of the provision shall not exceed the historical cost.

For the purposes of this regulation, a security shall be considered as being not actively traded, if its trading volume does not exceed ten thousand units in any trading session during the last twelve months.

7. Loans--Loans shall be measured at historical cost subject to impairment provisions.

The insurer shall assess the quality of its loan assets and shall provide for impairment. The impairment provision shall not be less than the aggregate amount of loans which are subject to defaults of the nature mentioned below:-

- (i) interest remaining unpaid for over a period of six months; and
- (ii) instalment(s) of loan falling due and remaining unpaid during the last six months.

8. Catastrophe Reserve--Catastrophe reserve shall be created in accordance with norms, if any, prescribed by the Authority. Investment of funds out of catastrophe reserve shall be made in accordance with prescription of the Authority.

It is clarified that this reserve is towards meeting losses which might arise due to an entirely unexpected set of events and not for any specific known purpose. This reserve is in the nature of an amount set aside for the potential future liability against the insurance policies in force.

PART II
Disclosures forming part of Financial Statements

A. The following shall be disclosed by way of notes to the Balance Sheet:

1. Contingent Liabilities:
 - (a) Partly-paid up investments
 - (b) Underwriting commitments outstanding
 - (c) Claims, other than those under policies, not acknowledged as debts
 - (d) Guarantees given by or on behalf of the company
 - (e) Statutory demands/liabilities in dispute, not provided for
 - (f) Reinsurance obligations
 - (g) Others (to be specified)
2. Encumbrances to assets of the company in and outside India.
3. Commitments made and outstanding for Loans, Investments and Fixed Assets.
4. Claims, less reinsurance, paid to claimants in/outside India.
5. Actuarial assumptions for claim liabilities in the case of policies exceeding four years.
6. Ageing of claims – distinguishing between claims outstanding for more than six months and other claims.
7. Premiums, less reinsurance, written from business in/outside India.
8. Extent of premium income recognised, based on varying risk pattern, category wise, with basis and justification therefor, including whether reliance has been placed on external evidence.
9. Value of contracts in relation to investments, for:
 - (a) Purchases where deliveries are pending;
 - (b) Sales where payments are overdue.
10. Operating expenses relating to insurance business: basis of allocation of expenditure to various classes of business.
11. Historical costs of those investments valued on fair value basis.
12. Computation of managerial remuneration.
13. Basis of amortisation of debt securities.
14. (a) Unrealised gain/losses arising due to changes in the fair value of listed equity shares and derivative instruments are to be taken to equity under the head 'Fair Value Change Account' and on realisation reported in profit and loss Account.
 (b) Pending realisation, the credit balance in the 'Fair Value Change Account' is not available for distribution.
15. Fair value of investment property and the basis therefor.
16. Claims settled and remaining outstanding for a period of more than six months on the balance sheet date.

B. The following accounting policies shall form an integral part of the financial statements:

1. All significant accounting policies in terms of the accounting standards issued by the ICAI, and significant principles and policies given in Part I of Accounting Principles. Any other accounting policies followed by the insurer shall be stated in the manner required under Accounting Standard AS 1 issued by ICAI.
2. Any departure from the accounting policies as aforesaid shall be separately disclosed with reasons for such departure.

C. The following information shall also be disclosed:

1. Investments made in accordance with any statutory requirement should be disclosed separately together with its amount, nature, security and any special rights in and outside India.
2. Segregation into performing/ non performing investments for purpose of income recognition as per the directions, if any, issued by the Authority.
3. Percentage of business sector-wise.
4. A summary of financial statements for the last five years, in the manner as may be prescribed by the Authority.
5. Accounting Ratios as may be prescribed by the Authority.
6. Basis of allocation of Interest, Dividends and Rent between Revenue Account and Profit and Loss Account.

PART III

GENERAL INSTRUCTIONS FOR PREPARATION OF FINANCIAL STATEMENTS

- 1) The corresponding amounts for the immediately preceding financial year for all items shown in the Balance Sheet, Revenue Account and Profit and Loss Account should be given.
- 2) The figures in the financial statements may be rounded off to the nearest thousands.
- 3) Interest, dividends and rentals receivable in connection with an investment should be stated as gross value, the amount of income tax deducted at source being included under 'advance taxes paid'.
- 4) Income from rent shall not include any notional rent.
- 5) (I) For the purposes of financial statements, unless the context otherwise requires -
 - (a) the expression 'provision' shall, subject to note II below mean any amount written off or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets, or retained by way of providing for any known liability or loss of which the amount cannot be determined with substantial accuracy;
 - (b) the expression "reserve" shall not, subject to as aforesaid, include any amount written off or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets or retained by way of providing for any known liability;
 - (c) the expression capital reserve shall not include any amount regarded as free for distribution through the profit and loss account; and the expression "revenue reserve" shall mean any reserve other than a capital reserve;
 - (d) The expression "liability" shall include all liabilities in respect of expenditure contracted for and all disputed or contingent liabilities.
- (II) Where:
 - (a) any amount written off or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets, or
 - (b) any amount retained by way of providing for any known liability is in excess of the amount which in the opinion of the directors is reasonably necessary for the purpose, the excess shall be treated for the purposes of these accounts as a reserve and not as a provision.
- 6) The company should make provisions for damages under lawsuits where the management is of the opinion that the award may go against the insurer.
- 7) Risks assumed in excess of the statutory provisions, if any, shall be separately disclosed indicating the amount of premiums involved and the amount of risks covered. The auditor shall, however, make an appropriate qualification in this regard in his report.
- 8) Any debit balance of Profit and Loss Account shall be shown as deduction from uncommitted reserves and the balance if any, shall be shown separately.

PART IV
CONTENTS OF MANAGEMENT REPORT

There shall be attached to the financial statements, a management report containing, *inter alia*, the following duly authenticated by the management:

1. Confirmation regarding the continued validity of the registration granted by the Authority;
2. Certification that all the dues payable to the statutory authorities have been duly paid;
3. Confirmation to the effect that the shareholding pattern and any transfer of shares during the year are in accordance with the statutory or regulatory requirements;
4. Declaration that the management has not directly or indirectly invested outside India the funds of the holders of policies issued in India;
5. Confirmation that the required solvency margins have been maintained;
6. Certification to the effect that the values of all the assets have been reviewed on the date of the Balance Sheet and that in his (insurer's) belief the assets set forth in the Balance-sheets are shown in the aggregate at amounts not exceeding their realisable or market value under the several headings – "Loans", "Investments", "Agents balances", "Outstanding Premiums", "Interest, Dividends and Rents outstanding", "Interest, Dividends and Rents accruing but not due", "Amounts due from other persons or Bodies carrying on insurance business", "Sundry Debtors", "Bills Receivable", "Cash" and the several items specified under "Other Accounts";
7. Certification to the effect that the that no part of the life insurance fund has been directly or indirectly applied in contravention of the provisions of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938) relating to the application and investment of the life insurance funds;
8. Disclosure with regard to the overall risk exposure and strategy adopted to mitigate the same;
9. Operations in other countries, if any, with a separate statement giving the management's estimate of country risk and exposure risk and the hedging strategy adopted;
10. Ageing of claims indicating the trends in average claim settlement time during the preceding five years;
11. Certification to the effect as to how the values, as shown in the balance sheet, of the investments and stocks and shares have been arrived at, and how the market value thereof has been ascertained for the purpose of comparison with the values so shown;
12. Review of asset quality and performance of investment in terms of portfolios, i.e., separately in terms of real estate, loans, investments, etc.
13. A responsibility statement indicating therein that:
 - (i) in the preparation of financial statements, the applicable accounting standards, principles and policies have been followed along with proper explanations relating to material departures, if any;
 - (ii) the management has adopted accounting policies and applied them consistently and made judgements and estimates that are reasonable and prudent so as to give a true and fair view of the state of affairs of the company at the end of the financial year and of the operating profit or loss and of the profit or loss of the company for the year;
 - (iii) the management has taken proper and sufficient care for the maintenance of adequate accounting records in accordance with the applicable provisions of the Insurance Act 1938 (4 of 1938) / Companies Act, 1956 (1 of 1956), for safeguarding the assets of the company and for preventing and detecting fraud and other irregularities;
 - (iv) the management has prepared the financial statements on a going concern basis;
 - (v) the management has ensured that an internal audit system commensurate with the size and nature of the business exists and is operating effectively.

PART V**Preparation of Financial Statements**

- (1) An insurer shall prepare the Revenue Account, Profit and Loss Account [Shareholders' Account] and the Balance Sheet in Form B-RA, Form B-PL, and Form B-BS, or as near thereto as the circumstances permit. Provided that an insurer shall prepare Revenue Account separately for fire, marine, and miscellaneous insurance business.
- (2) An insurer shall prepare separate Receipts and Payments Account in accordance with the Direct Method prescribed in AS 3 – “Cash Flow Statement” issued by the ICAI.

FORM B-RA

Name of the Insurer:
Registration No. and Date of Registration with the IRDA

REVENUE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 20____.

(To be prepared separately fire, marine, and miscellaneous insurance)

	Particulars	Schedule	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Premiums earned (Net)	1		
2.	Others (to be specified)			
3.	Change in provision for unexpired risk			
4.	Interest, Dividend & Rent – Gross			
	TOTAL (A)			
1.	Claims Incurred (Net)	2		
2.	Commission	3		
3.	Operating Expenses related to Insurance Business	4		
4.	Others – To be specified			
	TOTAL (B)			
	Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/Miscellaneous Business (A - B)			

FORM B-PL

Name of the Insurer:

Registration No. and Date of Registration with the IRDA

PROFIT AND LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 20____.

	Particulars	Schedule	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	OPERATING PROFIT/(LOSS)			
	(a) Fire Insurance			
	(b) Marine Insurance			
	(c) Miscellaneous Insurance			
2.	INCOME FROM INVESTMENTS			
	(a) Interest, Dividend & Rent – Gross			
	(b) Profit on sale of investments			
	Less: Loss on sale of investments			
3.	OTHER INCOME (To be specified)			
	TOTAL (A)			
4.	PROVISIONS (Other than taxation)			
	(a) For diminution in the value of investments			
	(b) Others (to be specified)			
5.	OTHER EXPENSES			
	(a) Expenses other than those related to Insurance Business			
	(b) Others (To be specified)			
	TOTAL (B)			
	Profit Before Tax			
	Provision for Taxation			
	Profit After Tax			
	Less: Catastrophe Reserve *			
	Profit available for appropriation			
	APPROPRIATIONS			
	(a) Interim dividends paid during the year			
	(b) Proposed final dividend			
	(c) Dividend distribution tax			
	(d) Transfer to any Reserves or Other Accounts (to be specified)			
	Balance of profit/ loss brought forward from last year			
	Balance carried forward to Balance Sheet			

Cumulative Shortfall in the Catastrophe appropriation Rs. ----- pending surplus

FORM B-BL

Name of the Insurer:	
----------------------	--

Registration No. and Date of Registration with the IRDA	
---	--

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 20____

	Schedule	Current Year (Rs. 1000)	Previous Year (Rs. 1000)
SOURCES OF FUNDS			
SHARE CAPITAL	5		
RESERVES AND SURPLUS	6		
FAIR VALUE CHANGE ACCOUNT			
BORROWINGS	7		
TOTAL			
APPLICATION OF FUNDS			
INVESTMENTS	8		
LOANS	9		
FIXED ASSETS	10		
CURRENT ASSETS			
Cash and Bank Balances	11		
Advances and Other Assets	12		
Sub-Total (A)			
CURRENT LIABILITIES	13		
PROVISIONS	14		
Sub-Total (B)			
NET CURRENT ASSETS (C) = (A - B)			
MISCELLANEOUS EXPENDITURE (to the extent not written off or adjusted)	15		
DEBIT BALANCE IN PROFIT AND LOSS ACCOUNT			
TOTAL			

CONTINGENT LIABILITIES

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Partly paid-up investments		
2.	Claims, other than against policies, not acknowledged as debts by the company		
3.	Underwriting commitments outstanding		
4.	Guarantees given by or on behalf of the Company		
5.	Statutory demands/ liabilities in dispute, not provided for		
6.	Reinsurance obligations		
7.	Others (to be specified)		
	TOTAL		

SCHEDULES FORMING PART OF FINANCIAL STATEMENTS**SCHEDULE – 1****PREMIUM EARNED [NET]**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
	Premium from direct business written		
	Add: Premium on reinsurance accepted		
	Less : Premium on reinsurance ceded		
	Net Premium		
	Adjustment for changes in Unearned Premium		
	Adjustment for changes in premium received in advance		
	Total Premium Earned (Net)		
	Premium Income from business effected :		
	In India		
	Outside India		
	Total Premium Earned (Net)		

Notes:

- (a) In case of premiums less reinsurance, in respect of any segment of insurance business exceeds 1 percent of total premium earned, the same shall be disclosed separately.
- (b) Reinsurance premiums whether on business ceded or accepted are to be brought into account, before deducting commission, under the head of reinsurance premiums.

SCHEDULE – 2**CLAIMS INCURRED [NET]**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
	Claims paid		
	Direct		
	Add :Re-insurance accepted		
	Less :Re-insurance Ceded		
	Net Claims paid		
	Total Claims Incurred		

Claims paid to claimants:		
In India		
Outside India		
Total Claims Incurred		

Notes:

- a) *Incurred But Not Reported (IBNR). Incurred but not enough reported [IBNER] claims should be included in the amount for claims.*
- b) *Claims include claims settlement costs.*
- c) *The surveyor fees, legal and other expenses shall also form part of claims cost.*
- d) *Claims cost should be adjusted for estimated salvage value if there is a sufficient certainty of its realisation.*

**SCHEDULE-3
COMMISSION**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
	Commission paid		
	Direct		
	Add: Re-insurance Accepted		
	Less: Commission on Re-Insurance Ceded		
	Net Commission		

Note:

The profit/ commission, if any, are to be combined with the Re-insurance accepted or Re-insurance ceded figures.

SCHEDULE – 4**OPERATING EXPENSES RELATED TO INSURANCE BUSINESS**

	Particulars	Current Year	Previous Year
		(Rs.'000)	(Rs.'000)
1.	Employees' remuneration & welfare benefits		
2.	Managerial remuneration		
3.	Travel, conveyance and vehicle running expenses		
4.	Rents, rates & taxes		
5.	Repairs		
6.	Printing & stationery		
7.	Communication		
8.	Legal & professional charges		
9.	Medical fees		
10.	Auditors' fees, expenses etc		
	(a) as auditor		
	(b) as adviser or in any other capacity, in respect of		
	(i) Taxation matters		
	(ii) Insurance matters		
	(iii) Management services; and		
	(c) in any other capacity		
11.	Advertisement and publicity		
12.	Interest & Bank Charges		
13.	Others (to be specified)		
14.	Depreciation		
	TOTAL		

Notes:

- (a) *Items of expenses in excess of one percent of net premium or Rs.5,00,000 whichever is higher, shall be shown as a separate line item.*
- (b) *Under the sub-head "Others", 'Operating Expenses (Insurance Business)' shall include items like foreign exchange gains or losses and other items.*

SCHEDULE – 5**SHARE CAPITAL**

	Particulars	Current Year	Previous Year
		(Rs.'000).	(Rs.'000).
1.	Authorised Capital		
	Equity Shares of Rs..... each		
2.	Issued Capital		
	Equity Shares of Rs.each		
3.	Subscribed Capital		
	Equity Shares of Rs.....each		
4.	Called-up Capital		
	Equity Shares of Rs.each		
5.	Less : Calls unpaid		
	Add : Equity Shares forfeited (Amount originally paid up)		
	Less : Preliminary Expenses		
	Expenses including commission or brokerage on Underwriting or subscription of shares		
	TOTAL		

Notes:

- (a) *The amount capitalised on account of issue of bonus shares should be disclosed.*
- (b) *In case any part of the capital is held by a holding company, the same should be separately disclosed.*

SCHEDULE – 5A**SHARE CAPITAL****PATTERN OF SHAREHOLDING**

[As certified by the Management]

Shareholder	Current Year		Previous Year	
	Number of Shares	% of Holding	Number of Shares	% of Holding
Promoters				
• Indian				
• Foreign				
Others				
TOTAL				

SCHEDULE – 6**RESERVES AND SURPLUS**

	Particulars	Current Year	Previous Year
		(Rs.'000)	(Rs.'000)
1.	Capital Reserve		
2.	Capital Redemption Reserve		
3	Share Premium		
4	General Reserves		
	Less: Debit balance in Profit and Loss Account		
	Less: Amount utilized for Buy-back		
5	Catastrophe Reserve		
6	Other Reserves (to be specified)		
7	Balance of Profit in Profit & Loss Account		
	TOTAL		

*Note:**Additions to and deductions from the reserves should be disclosed under each of the specified heads.***SCHEDULE - 7**
BORROWINGS

	Particulars	Current Year	Previous Year
		(Rs.'000).	(Rs.'000).
1.	Debentures/ Bonds		
2.	Fixed Deposits		
3.	Banks		
4.	Financial Institutions		
5.	Other entities carrying on insurance business		
6.	Others (to be specified)		
	TOTAL		

Notes:

- (a) The extent to which the borrowings are secured shall be separately disclosed stating the nature of the security under each sub-head.
- (b) Amounts due within 12 months from the date of Balance Sheet should be shown separately

**SCHEDULE- 8
INVESTMENTS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
LONG TERM INVESTMENTS			
1.	Government securities and Government guaranteed bonds including Treasury Bills		
2.	Other Approved Securities		
3.	Other Investments		
	(a) Shares (aa) Equity (bb) Preference		
	(b) Mutual Funds		
	(c) Derivative Instruments		
	(d) Debentures/ Bonds		
	(e) Other Securities (to be specified)		
	(f) Subsidiaries		
	(g) Investment Properties-Real Estate		
SHORT TERM INVESTMENTS			
1.	Government securities and Government guaranteed bonds including Treasury Bills		
2.	Other Approved Securities		
3.	Other Investments		
	(a) Shares (aa) Equity (bb) Preference		
	(b) Mutual Funds		
	(c) Derivative Instruments		
	(d) Debentures/ Bonds		
	(e) Other Securities (to be specified)		
	(f) Subsidiaries		
	(g) Investment Properties-Real Estate		
TOTAL			
INVESTMENTS			
1	In India		
2	Outside India		
	TOTAL		

Notes:

- (a) Investments in subsidiary/holding companies, joint ventures and associates shall be separately disclosed, at cost.
 - (i) Holding company and subsidiary shall be construed as. Significant influence may be exercised in several ways, for example, by representation on the board of directors, participation in the policy making process, material inter-company transactions, interchange of managerial defined in the Companies Act, 1956:
 - (ii) Joint Venture is a contractual arrangement whereby two or more parties undertake an economic activity, which is subject to joint control.
 - (iii) Joint control - is the contractually agreed sharing of power to govern the financial and operating policies of an economic activity to obtain benefits from it.
 - (iv) Associate - is an enterprise in which the company has significant influence and which is neither a subsidiary nor a joint venture of the company.
 - (v) Significant influence (for the purpose of this schedule) -means participation in the financial and operating policy decisions of a company, but not necessarily control of those policiespersonnel or dependence on technical information. Significant influence may be gained by share ownership, statute or agreement. As regards share ownership, if an investor holds, directly or indirectly through subsidiaries, 20 percent or more of the voting power of the investee, it is presumed that the investor does have significant influence, unless it can be clearly demonstrated that this is not the case. Conversely, if the investor holds, directly or indirectly through subsidiaries, less than 20 percent of the voting power of the investee, it is presumed that the investor does not have significant influence, unless such influence is clearly demonstrated. A substantial or majority ownership by another investor does not necessarily preclude an investor from having significant influence.

- (b) Aggregate amount of company's investments other than listed equity securities and derivative instruments and also the market value thereof shall be disclosed.
- (c) Investments made out of Catastrophe reserve should be shown separately.
- (d) Debt securities will be considered as "held to maturity" securities and will be measured at historical cost subject to amortisation.
- (e) Investment Property means a property [land or building or part of a building or both] held to earn rental income or for capital appreciation or for both, rather than for use in services or for administrative purposes.

SCHEDULE - 9

LOANS

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1. SECURITY-WISE CLASSIFICATION			
Secured			
(a) On mortgage of property			
(aa) In India			
(bb) Outside India			
(b) On Shares, Bonds, Govt. Securities			
(c) Others (to be specified)			
Unsecured			
TOTAL			
2. BORROWER-WISE CLASSIFICATION			
(a) Central and State Governments			
(b) Banks and Financial Institutions			
(c) Subsidiaries			
(d) Industrial Undertakings			
(e) Others (to be specified)			
TOTAL			
3. PERFORMANCE-WISE CLASSIFICATION			
(a) Loans classified as standard			
(aa) In India			
(bb) Outside India			
(b) Non-performing loans less provisions			
(aa) In India			
(bb) Outside India			
TOTAL			
4. MATURITY-WISE CLASSIFICATION			
(a) Short Term			
(b) Long Term			
TOTAL			

Notes:

- (a) *Short-term loans shall include those, which are repayable within 12 months of the balance sheet date. Long term loans shall be the loans other than short-term loans.*
- (b) *Provisions against non-performing loans shall be shown separately.*
- (c) *The nature of the security in case of all long term secured loans shall be specified in each case. Secured loans for the purposes of this schedule, means loans secured wholly or partly against an asset of the company.*
- (d) *Loans considered doubtful and the amount of provision created against such loans shall be disclosed*

SCHEDULE - 10
FIXED ASSETS

(Rs. '000)

Particulars	Cost/ Gross Block Depreciation				Net Block					
	Opening	Additions	Deductions	Closing	Upto Last Year	For The Year	On Sales/ Adjustments	To Date	As at year end	Previous Year
Goodwill										
Intangibles (specify)										
Land-Freehold										
Leasehold Property										
Buildings										
Furniture & Fittings										
Information Technology Equipment										
Vehicles										
Office Equipment										
Others (Specify nature)										
TOTAL										
PREVIOUS YEAR										

*Note:**Assets included in land, building and property above exclude Investment Properties as defined in note (e) to Schedule 8.*
SCHEDULE- 11
CASH AND BANK BALANCES

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Cash (including cheques, drafts and stamps)		
2.	Bank Balances		
	(a) Deposit Accounts (aa) Short-term (due within 12 months) (bb) Others (b) Current Accounts (c) Others (to be specified)		
3.	Money at Call and Short Notice		
	(a) With Banks (b) With other Institutions		
4.	Others (to be specified)		
	TOTAL		
	Balances with non-scheduled banks included in 2 and 3 above		

	CASH & BANK BALANCES		
1	In India		
2	Outside India		
	TOTAL		

*Notes:**Bank balance may include remittances in transit. If so, the nature and amount should be separately stated.*

SCHEDULE - 12

ADVANCES AND OTHER ASSETS

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
ADVANCES			
1.	Reserve deposits with ceding companies		
2.	Advances to ceding companies		
3.	Application money for investments		
4.	Prepayments		
5.	Advances to Officers/ Directors		
6.	Advance tax paid and taxes deducted at source		
7.	Others (to be specified)		
	TOTAL (A)		
OTHER ASSETS			
1.	Income accrued on investments		
2.	Outstanding Premiums		
3.	Agents' Balances		
4.	Foreign Agencies' Balances		
5.	Due from other Insurance Entities		
6.	Due from subsidiaries/ holding		
7.	Reinsurance claims/balances receivable		
8.	Deposit with Reserve Bank of India [Pursuant to section 7 of Insurance Act, 1938]		
9.	Others (to be specified)		
	TOTAL (B)		
	TOTAL (A+B)		

Notes:

- (a) The items under the above heads shall not be shown net of provisions for doubtful amounts. The amount of provision against each head should be shown separately.
 (b) The term 'officer' should conform to the definition of the word 'officer' given under the Companies Act, 1956.

SCHEDULE - 13

CURRENT LIABILITIES

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1	Reserve for Unearned Premium		
2	Agents' Balances		
3	Balances due to other insurance companies		
4	Advances from Treaty Companies		
5	Deposits held on re-insurance ceded		
6	Premiums received in advance		
7	Sundry creditors		
8	Due to subsidiaries/ holding company		
9	Claims Outstanding		
10	Due to Officers/ Directors		
11	Others (to be specified)		
	TOTAL		

SCHEDULE – 14**PROVISIONS**

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1	Reserve for Unexpired risk		
2	For taxation (less advance tax paid and taxes deducted at source)		
3	For proposed dividends		
4	For dividend distribution tax		
5	Others (to be specified)		
	TOTAL		

SCHEDULE – 15**MISCELLANEOUS EXPENDITURE**
(To the extent not written off or adjusted)

	Particulars	Current Year (Rs.'000)	Previous Year (Rs.'000)
1.	Discount Allowed in issue of shares/ debentures		
2.	Others (to be specified):		
	TOTAL		

Notes.

- (a) No item shall be included under the head "Miscellaneous Expenditure" and carried forward unless:
- 1. some benefit from the expenditure can reasonably be expected to be received in future, and
 - 2. the amount of such benefit is reasonably determinable.
- (b) The amount to be carried forward in respect of any item included under the head "Miscellaneous Expenditure" shall not exceed the expected future revenue/other benefits related to the expenditure.

SCHEDULE C*(See Regulation 3)***AUDITOR'S REPORT**

The report of the auditors on the financial statements of every insurer shall deal with the matters specified herein:

1. (a) That they have obtained all the information and explanations which, to the best of their knowledge and belief were necessary for the purposes of their audit and whether they have found them satisfactory;
- (b) Whether proper books of account have been maintained by the insurer so far as appears from an examination of those books;
- (c) Whether proper returns, audited or unaudited, from branches and other offices have been received and whether they were adequate for the purpose of audit;
- (d) Whether the Balance sheet, Revenue account and Profit and Loss account dealt with by the report and the Receipts and Payments Account are in agreement with the books of account and returns;

(e) Whether the actuarial valuation of liabilities is duly certified by the appointed actuary including to the effect that the assumptions for such valuation are in accordance with the guidelines and norms, if any, issued by the Authority, and/or the Actuarial Society of India in concurrence with the Authority.

2. The auditors shall express their opinion on:

(a) (i) Whether the balance sheet gives a true and fair view of the insurer's affairs as at the end of the financial year/period;

(ii) Whether the revenue account gives a true and fair view of the surplus or the deficit for the financial year/period;

(iii) Whether the profit and loss account gives a true and fair view of the profit or loss for the financial year/period;

(iv) Whether the receipts and payments account gives a true and fair view of the receipts and payments for the financial year/period;

(b) The financial statements stated at (a) above are prepared in accordance with the requirements of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), the Insurance Regulatory and Development Act, 1999 (41 of 1999) and the Companies Act, 1956 (1 of 1956), to the extent applicable and in the manner so required.

(c) Investments have been valued in accordance with the provisions of the Act and these Regulations.

(d) The accounting policies selected by the insurer are appropriate and are in compliance with the applicable accounting standards and with the accounting principles, as prescribed in these Regulations or any order or direction issued by the Authority in this behalf.

3. The auditors shall further certify that:

(a) they have reviewed the management report and there is no apparent mistake or material inconsistencies with the financial statements;

(b) the insurer has complied with the terms and conditions of the registration stipulated by the Authority,

4. A certificate signed by the auditors [which shall be in addition to any other certificate or report which is required by law to be given with respect to the balance sheet] certifying that:—

(a) they have verified the cash balances and the securities relating to the insurer's loans, reversions and life interests (in the case of life insurers) and investments;

(b) to what extent, if any, they have verified the investments and transactions relating to any trusts undertaken by the insurer as trustee; and

(c) no part of the assets of the policyholders' funds has been directly or indirectly applied in contravention of the provisions of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938) relating to the application and investments of the policyholders' funds.

N. RANGACHARY, Chairperson

[Advt./3/4/Exty./161/2000]